अध्याय – तृतीय

नेवारी संगीत में प्रयुक्त विभिन्न वाद्य एवं प्रयोग

3.1 नेवारी वाद्यों का वर्गीकरण

3.2 विभिन्न वाद्यों के बोल एवं विस्तार

तृतीय अध्याय :- नेवारी संगीत में प्रयुक्त विभिन्न वाद्य एवं प्रयोग

नेपाल का नेवारी जाति द्वारा गाया जाने वाला नेवारी संगीत गीत, वाद्य तथा नृत्य द्वारा सुसज्जित संगीत है। प्राचीन काल से ही गीत के साथ-साथ वाद्य तथा नृत्य भी प्रबल रूप में आगे बढ़ा हुआ संगीत मान सकते हैं। नेपाली इतिहास के अनुसार प्राचीन काल से ही यहां पर अध्यात्म, कला, संस्कृति आदि से सुसज्जित इतिहास पाया गया है। समय काल के अंतराल में विभिन्न राजा महाराजाओं ने शासन किया। अपने शासनकाल में मनोरंजन तथा युद्ध के दौरान देश के विभिन्न लोक संगीत को सहारा प्राप्त होता था, जिसमें वाद्य वादन का महत्वपूर्ण योगदान रहता था। वर्तमान समय में लोकबाजा संग्रहालय के संस्थापक के अनुसार संपूर्ण नेपाल के लोक वाद्यों की संख्या लगभग 135 मानी गई है एवं लुप्त हो चुके वाद्यों को मिलाकर लगभग 650 वाद्यों का उल्लेख मिलता है।[(1)] लोकगीत तथा लोक वाद्य एक दूसरे के पूरक है इसीलिए नेपाली संगीत के विकास क्रम में लोक वाद्यों की अहम भूमिका रही है। किसी भी राष्ट्र का संगीत हमेशा दो धाराओं में प्रवाह मान होता है, एक शिक्षित वर्ग में जैसे कि वेद, पुराण, उपनिषद तथा अन्य उच्च स्तरीय साहित्य और दूसरा प्रकृति एवं साधारण जन समुदाय में अभिव्यक्ति के रूप में। लोक संगीत संपूर्ण मानव जाति की ऐतिहासिकता, जातीयता, सांस्कृतिक भाषिक एवं विभिन्न संस्कार प्रतिबिंब एवं स्थानीयता की भावनाओं को समाहित करता है।

नेपाल के लोकसंगीत को अग्रपंक्ति में ले जाने के लिए नेवारी संगीत की विशेष भूमिका रही है। नेवारी संगीत के साथ साथ नेवारी लोक वाद्यों का महत्व भी विशेष माना जा सकता है। नेवारी जाति की अपनी सभ्यता के विकासक्रम में अन्य क्षेत्रों के साथ संगीत क्षेत्र का भी विकास हुआ। पर्याप्त शोध एवं अनुसंधान की कमी के कारण नेवारी संगीत की वाद्य परंपरा का निश्चित समय ज्ञात नहीं होता परंतु ऐतिहासिक प्रमाण के आधार पर नेवारी वाद्य परंपरा 'लिच्छवी काल' में व्यापक और व्यवस्थित रूप से प्रचार प्रसार में आई होगी ऐसा माना गया है। मृगस्थली में स्थित लगभग आठवीं शताब्दी के पत्थर की मूर्ति में ताः वाद्य का वादन हो रहा हो ऐसी आकृति पाई गई है। शक संवत् (ने.सं.) 526 में 'लेले' में स्थित 'अंशुवर्मा शिवदेव शीलापत्र' इसका प्राचीन प्रमाण माना गया है। भट्टारक महाराज श्री शिवदेव की स्वीकृति में श्री महाशामंतांशुवर्मा ने पहले राजा एवं साधकों के कल्याण के लिए जमा किया हुआ धन चिरकाल तक यथावत रहे, उस उद्देश्य से विभिन्न गोष्ठीका, पांचाली जैसे वादित्र गोष्ठी (वाद्य गोष्ठी)

1. पौड्याल, हरिप्रसाद/ शोध प्रबंध- नेपाल के प्रचलित लोकसंगीत में
   वाद्यों की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन/अध्याय-4/ p-5

के लिए ज़मीन दान में दिया हुआ था, इसका उल्लेख पत्र में दिया गया है।[1] इस प्रकार आज से 14 वर्ष पहले ही वाद्य परंपराओं को व्यवस्थित रूप से स्वीकार कर सकते हैं।

मल्ल काल में जाकर नेवारी संगीत व्यापक रूप से फैलने लगा। उस समय नृत्य, नाटक, जात्रा परंपराएं भी बढ़ने लगी। जिससे नेवारी संगीत वाद्यों की परंपरा और अधिक रूप में व्यापक हुई ऐसा माना जा सकता है। वाद्य क्षेत्र में वाद्यों के विकास के लिए मल्ल राजाओं ने उल्लेखनीय काम किया है। जयस्थिति मल्ल ने काम के आधार पर जाति विभाजन किया। इसी क्रम में चमड़ी से मढ़े हुए वाद्य वादकों को 'कुलु', मुहाली (सुषिर) वाद्य वादकों को 'कुसले' और कां वाद्य वादकों को टेपोच (व्यपय्) और खुसल जाति में वर्गीकृत कर दिया था। इस तरह संगीत कर्मियों वर्ग को एक अलग ही पहचान एवं सम्मान प्राप्त हुआ था।

पाटन के शासक योगनरेंद्र मल्ल ने अपनी मुद्रा और ताम्रपत्र में स्वयं के लिए 'संगीतादिपारंग' की उपाधि का प्रयोग किया था। काठमांडू के शासक प्रतापमल्ल ने भी 'शास्त्रसंगीतदिपारंग' कि उपाधि ग्रहण की थी। मल्ल राजा स्वयं कलानुरागी और संगीत कलाकार होने के कारण तत्कालीन समय में नेवारी संगीत का क्षेत्र व्यापक हो गया था। शाहकालीन राजा पृथ्वीनारायण शाह ने अपने दिव्य उपदेश में विदेशी संगीत अपने देश में प्रवेश ना करें इसलिए स्वदेशी संगीत जैसे नेवारी वाद्य, नृत्य को ही मनोरंजन का प्राथमिक श्रोत माना था।

संपूर्ण नेवारी जाति द्वारा बजाए जाने वाले वाद्य नेवारी जाति द्वारा ही निर्माण किए जाते हैं यह कहना सहज नहीं है। कुछ वाद्य जैसे 'क्वंचाखिं'(अवनद्ध वाद्य) जिसमें तबला और बाम दोनों का आवाज एक में ही उत्पन्न होता है। इस वाद्य का विकास नेवारी जाति द्वारा किया हुआ प्राप्त होता है। कुछ वाद्य विभिन्न समयकाल में नेपाल में प्रवेश किए गए थे जिसे नेवारी जाति ने अपने तरीके से अपना ही बोल बजाने की शैली का निर्माण किया। 'पोंगा'(सुषिर वाद्य) नेवारी मौलिक वाद्य माना जाता है परंतु यह वाद्य संभवतः मध्य एशिया से नेपाल के पूर्वी भाग से आया है ऐसी किंवदंती भी प्रचलित हैं। मृदंग को नेवारी में पश्चिम वाद्य कहते हैं जो हिंदुस्तानी संगीत के ध्रुपद गायन, कथक नृत्य आदि में संगत के लिए उपयोग में लिया जाता है। दाफा संगीत में मुख्य वाद्य 'देसिखिं' बाहरी देश से आया है इसलिए देसि(विदेशी) खिं शायद कहा गया हो। "वेद, रामायण, महाभारत और पुराणों में प्रयुक्त दुंदुभी, भेरी, भोर और आडंबर आदि नाम से उल्लेखित नगरा बाजा एशिया, यूरोप, अफ्रीका, अमेरिका में भी प्रचलित हैं। नगरा सम्मिलित पञ्चै बाजा की उत्पत्ति मध्य पूर्व मिलिट्री ब्यांड(तब्ला खां) द्वारा हुई है। जिसका इस्लामिक

---

1. प्रजापति, सुभाषराम/ संस्कृतिभित्र/ p-10

आक्रमणकारियों ने 11वीं सदी में भारत में प्रवेश कराके संभवतः राजपूत शरणार्थीयों द्वारा चौथी सदी में नेपाल में प्रवेश हुआ हो ऐसा माना गया है।"[1]

नेवारी वाद्य परंपरा के इतिहास में कुछ वाद्य मौलिक तथा कुछ अन्य स्थानों से आगमन हुए वाद्यों का प्रयोग हुआ है। एक निर्विवाद बात यह है कि अन्य आगमन हुए वाद्यों को भी नेवारी संगीत में अपना ही बोल, ताल, वादन तरीका बनाकर एक नया मौलिक स्वरूप बनाने में सफलता प्राप्त हुई है। मल्ल काल में बनाया गया वाद्य और उसके नए बोल, लिपि आदि वर्तमान में भी राष्ट्रीय अभिलेखालय, आशा सफुकूथी और व्यक्तिगत संग्रहालय में सुरक्षित है। आशा सफुकूथी कि पुस्तक सूची के अनुसार वहां पर खिं बोल, खिं बोली, प्वंगा बोली और पँय्ता बोली आदि 14 वाद्यों का ग्रंथ उपलब्ध है।

3.1 नेवारी वाद्यों का वर्गीकरण

परंपरागत रूप से नेवारी वाद्यों के विभिन्न प्रकार देखने को तथा सुनने को मिलते है। इन्हीं मौलिक रूप में प्रचलित नेवारी वाद्यों को शास्त्रीय संगीत के अनुसार चार भागों में विभाजित किया गया है:

नेवारी वाद्य वर्गीकरण

अवनद्ध वाद्य	**सुषिर वाद्य**	**घन वाद्य**	**तत् वाद्य**
खिं वाद्य	प्वंगा/ पोंगा	ताः/ तिछुँ	पिँवाचा
ध्या वाद्य	मुहाली वाद्य	बभू/ ख्वालमलि	याकुचा-
धिमय् वाद्य	नेकुं वाद्य	भुस्या	-बभू/
पछिमा वाद्य	बाँसुरी	छुस्या	याक्कमुको
कान्तां डबडब	काः वाद्य	तिनकुने/ तिनतिनचा	
(डमरू)		घौ/ केय्पुई/	
		ताईताई वाद्य	
		गँ वाद्य	
		घंघला/ घंगला	

3:1:1 अवनद्ध वाद्य:

अवनद्ध वाद्यों के मुख चमड़े से मढ़े होते है। इन वाद्यों को हाथ से एवं काष्ठ की दंडिका से बजाया जाता है। नेवारी संगीत में सबसे ज़्यादा अवनद्ध वाद्य का प्रयोग पाया गया है जिनको लय देने के लिए उपयुक्त माना गया है। अवनद्ध वाद्य का प्रयोग दाफा संगीत, भजन, नृत्य, विभिन्न पर्व, त्यौहार आदि में प्रयोग किया जाता है। अवनद्ध वाद्यों के अन्तर्गत निम्नलिखित वाद्यों का समावेश किया गया हैं।

1. प्रजापति, सुभाषराम/ संस्कृतिभित्र/ p-11

3:1:1:1 खिं वाद्य और उसके विभिन्न प्रकार:

खिं वाद्य दाफा संगीत का मुख्य वाद्य है। इस वाद्य को उपत्यका के ललितपुर एवं भक्तपुर में दाफा भी कहते हैं। शास्त्रीय संगीत के अनुरूप अवनद्ध वाद्य खिं की बनावट को देखा जाए तो यह काष्ठ का बना हुआ होता है और अंदर से खोखला होता है। इसकी लंबाई लगभग 30 इंच इतनी होती है जिसमें बीच का भाग थोड़ा खुला हुआ होता है। दोनों तरफ के खुले हुए भाग को चमड़े से ढका जाता है। तबला की तरह बीच भाग में दोनों तरफ स्याही(खउ इलाः) लगाया जाता है। बीच में दोनों तरफ के मुंह को बद्दी (तान- braces) द्वारा बांधा जाता है और खींचा जाता है। दाएं हाथ से बजाने वाला भाग छोटा एवं गोलाकार होता है, जिसे नासः कहते हैं इसका स्वर ऊंचा होता है और बाएं हाथ से बजने वाला भाग आकार में बड़ा गोल होता है जिसे मांका कहते है जो मध्य और मंद्र सुर में बजता है। खिं वाद्य जमीन पर लेटा कर या जांघ पर रखकर बजाया जाता है। नेवारी संगीत में विभिन्न प्रकार के खिं वाद्यों को बजाया जाता है। जैसे कि-

1. द्यः खिं
2. कोताः खिं
3. दाफा/ दापा खिं
4. नायो/ नाय् खिं
5. पयता/ पैंता खिं
6. कोंचा खिं
7. ज्व खिं
8. चाकः खिं
9. पस्ता खिं
10. लाताः खिं
11. मगः खिं

- **द्यः खिं**

द्यः खिं प्राचीन वाद्य में से एक वाद्य माना गया है जिसको केवल भगवान के कार्य में बजाया जाता है। नेवारी भाषा में द्यः का अर्थ भगवान है। कोई भी जात्रा, पर्व, त्यौहार जिसमें भगवान की आराधना का कार्य हो उसमें द्यः खिं वाद्य बजाया जाता है। जैसे कि कोई जात्रा, पर्व के प्रारंभ में भगवान से क्षमा

मांगते हैं जिससे होने वाली जात्रा पर्व सकुशल संपन्न हो। उसी समय जात्रा के लिए खट् (भगवान का सजा हुआ आसन) को उठाने के लिए द्यः खिं वाद्य ही पहले बजाया जाता है। नेपाल का मुख्य पर्व दसैं(दशहरा) में भिन्न भिन्न अन्न जैसे मकई, गेहूं आदि को अंकुरित करके फूल के रूप में प्रयोग करते हैं। जिसे जमरा(नलीः स्वां) बोलते हैं, इस जमरा रखने के समय द्यः खिं तथा अन्य वाद्य बचाए जाते हैं। नेवारी पर्व में पशुओं की बलि देने की प्रथा है, उस समय भी इस वाद्य का प्रयोग होता है।

द्यः खिं अवनद्ध वाद्य है जो लकड़ी के ऊपर चमड़े को मोड़कर बना होता है। जिसमें खरी नहीं होती है। वाद्य के दोनों तरफ केवल चमड़ी से आच्छादित मुंह होते है। इस वाद्य को दाएं तरफ खुले हाथ से और बाएं तरफ लकड़ी से बजाया जाता है। द्यः खिं वाद्य के सहायक वाद्य में काँय् अथवा छुस्याय(घन वाद्य) बजाया जाता है जो नाय्खिं के साथ बजाया जाने वाला छुस्याय से थोड़ा बड़े आकार का होता है। इस वाद्य के कलाकारों का कहना है कि अन्य वाद्यों की भांति इस वाद्य में भी अपना अलग बोल और ताल है। इस वाद्य में अलग-अलग पांच ताल बजाई जाती है[(1)] जैसे-

- भगवान की पूजा आराधना करने समय अलग ताल
- नगर परिक्रमा करते समय अलग ताल
- जात्रा पर्व को शुरू करने से पहले भगवान से क्षमायाचना मांगते समय अलग ताल
- नेवारी उपजाति बज्राचार्य, शाक्यों के चूड़ाकर्म करने समय अलग ताल
- सर्व साधारण जनता को सूचना देने के लिए अलग बोलो का प्रयोग एवं अलग ताल

- **कोताः खिं**

नेवारी संगीत में उच्च स्थान प्राप्त नेवारी समाज में विभिन्न उपलब्ध वाद्यों में से 'कोताः खिं' अवनद्ध वाद्य प्रमुख वाद्य के रूप में है। यह वाद्य धाः(अवनद्ध वाद्य) के समान है। लकड़ी से बना हुआ एवं बीच में खोखला यह वाद्य दोनों तरफ चमड़े से आच्छादित होता है, जिसमें खरी नहीं होती। बजाने की विधि यह है कि दाएं भाग में हाथ और बाएं भाग में लकड़ी का प्रयोग किया जाता है। यह वाद्य बौद्ध धर्मावलंबी की पूजा विधि में बजाया जाता है।

इस वाद्य की खास विशेषता यह है कि जो व्यक्ति इस वाद्य को बजाता है उसे यह वाद्य अपने घर में रखना पड़ता है और प्रतिदिन इस वाद्य को शुद्ध जल अर्पण करके पूजा करनी पड़ती है। जिस व्यक्ति ने इस वाद्य के वादन की जिम्मेदारी ली है वह व्यक्ति जब तक जिंदा है तब तक वही व्यक्ति वादन

1. लाछि, गणेशराम/ अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा मध्यपूर/ p-33

करेगा। उस व्यक्ति के मृत्यु के पश्चात या अशक्त होने पर कोई अन्य इस वाद्य का वादन कर सकता है।

- **दाफा/ दापा खिं**

नेवारी संगीत के मुख्य गायन दाफा संगीत में बजाया जाने वाला खिं वाद्य दाफा या दापा वाद्य कहा जाता है। यह नेवारी जाति के प्रमुख वाद्य के रूप में माना जाता है। दाफा संगीत का मुख्य वाद्य खिं वाद्य है। इस वाद्य के साथ अनिवार्य रूप में ताः बभू और प्वंगा वाद्य बजाया जाता है। वर्तमान में दाफा भजन में सुषिर वाद्य प्वंगा की संगत निम्न हो चुकी है। कहीं-कहीं दाफा समूह में पछिमा(अवनद्ध वाद्य) भी बजाया जाता है।

- **नायो/ नाय् खिं**

नाय् खिं अंतर्गत सबला(अवनद्ध वाद्य) और नाय् बाजा(मावल) जो घन वाद्य है, यह दो वाद्य की जोड़ी बजाई जाती है। नेवारी समुदाय में 'नाय्' एक जाति है जिसको खडगी कहते हैं। नाय् जाति द्वारा वादन होने का कारण इस वाद्य को 'नाय् खिं' कहा गया है। नाय् खिं वाद्य का मुख्य कार्य है सूचना देना, जिसको 'च्वयेकेगु' कहते हैं। "नगर में कोई विशेष सूचना, सरकारी उर्दी सुनाने तथा समाचार जनता के समक्ष पहुंचाने के लिए यह वाद्य बजाकर विभिन्न बस्ती के मुख्य मुख्य स्थान, चौराहे, चबूत्रा(दबली) आदि में खड़े होकर जानकारी देते हैं। यह परंपरा लिच्छवि काल के राजा नरेंद्रदेव के समय से प्रचलित है। ललितपुर में होने वाली भगवान की जात्रा में पंद्रह, आठ और पांच दिन पहले ही नगर में नायो/ नाय् खिं वाद्य सूचना देने हेतु उपयोग में लिया जाता था। इस बात का उल्लेख 'लेले वादित्ल गोष्ठी' संवत् 526 में अंशुवर्मा द्वारा उल्लेखित बाजं गुथि के अनुसार अनुमान लगाया गया है।"[1] उसके बाद मल्लकाल में अधिक प्रचलित मानी गई है। मल्लकाल में किसी के जन्म, मृत्यु, सुख एवं दुख की घटनाएं जनता तक पहुंचाने के लिए इस माध्यम का प्रयोग प्राप्त होता है। प्राचीन समय में सूचना प्रदान करने के लिए इस माध्यम का प्रयोग उपत्यका के संपूर्ण स्थानों पर था किंतु वर्तमान समय में इस परंपरा का प्रभाव कम हो गया है। वर्तमान में सूचना माध्यम के लिए नाय् खिं वाद्य का वादन प्रयोग नेवारी जात्रा पर्व और शव यात्रा में निरंतर पाया गया है।

नाय् खिं वाद्य के कुछ बोल इस प्रकार है[2]:

द्योः ल्हायगु (प्रारंभिक बोल):

---

1. ब्रजाचार्य, मदनसेन/ नेपाः गाः या नेवाः बौद्धसांस्कृतिक लोकबाजा/ p-80

2. श्रेष्ठ, विनोद/ नाय् खिं च्वयेकेगु/ p-10

रम्प तुम्प पातुम्प, पातनपा तुम्पा2
रनतौ नपा तुम्, पातनपा तुम्पा ।।
रनछुपा नखुपाखु पाउछुपा नखुपाखु2
पाक रम्पाधुम्पा पाधुम्म।।

रस्ते में जाते समय बजाने वाले बोल:

त त नखु तुमनखु तौ तौ तुमपाकु

चार रास्ते में बजाने वाले बोल:

रनतौ तुमपाकु, तौ तौ तुमपाकु,

अन्त्य में बजाने वाले बोल:

रनतन (तुमपाकु)^2, तुम तुमपा छ्याँ –

ऊपर उल्लेखित वाद्य के बोल नेवारी स्थान कीर्तिपुर में बजाए जाते हैं। हरेक स्थान में वाद्यों को बजाने की शैली भी थोड़ी बहुत भिन्न होती है। यह नाय् खिं वाद्य की बनावट को अगर देखा जाए तो यह वाद्य 13.6 इंच लंबा और गोलाई इसकी 7 इंच की होती है। इसमें खरी नहीं होती। एक तरफ हाथ और दूसरी तरफ लकड़ी से बजाया जाता है। अन्य अवनद्ध वाद्यों की तुलना में इस वाद्य में दाएं हाथ से बजाया जाने वाला नासः ज्यादा बड़ा होता है और बाएं हाथ से बजाया जाने वाला मंका भाग छोटे आकार का होता है इसलिए इस वाद्य को तांत्रिक वाद्य भी कहा जाता है।

- **पयता खिं/ पैंता खिं:**

पयता खिं/ पैंता खिं वाद्य एक तीनमुखी वाद्य है। यह भगवान शिव का प्रिय वाद्य माना जाता है। इस वाद्य का प्रयोग विशेषतः गँ प्याखँ (नाच) में, बुँगधः स्नान के समय तथा चच(तांत्रिक) गीत इत्यादि में होता है। इस वाद्य के साथ पोंगा(सुषिर वाद्य) और ताः(घन वाद्य) संगत के रूप में बजाया जाता है। इस वाद्य का प्रयोग उपत्यका के विशेष धार्मिक उत्सव तथा अनुष्ठान में पाया जाता है।

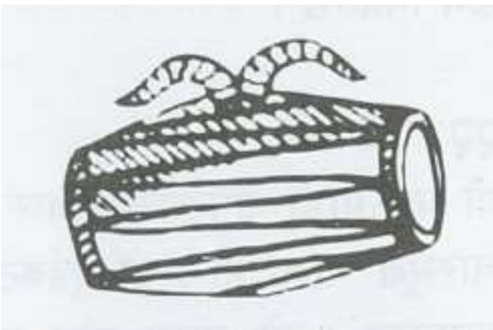

- **कोंचा खिं:**

कोंचा खिं नेवार जाति के ज्यापु समुदाय का प्रचलित वाद्य है। यह वाद्य छोटा आकार का घ्याम्पो (एक प्रकार का डिब्बा) जैसा होता है। जिसको दाएं तरफ हाथ से ही बजाया जाता है और दूसरी तरफ तान से बंधा हुआ होता है। दिखने में यह वाद्य दाएं तबले के समान होता है। इस वाद्य को काठमांडू और भक्तपुर में शुभ कार्य में बजाया जाता है और ललितपुर में नवबाजा में सीमित माना गया है। वादकों का कहना है कि इस इस वाद्य की ध्वनि से कुकुर(कुत्ता) रोने लगता है जो इस वाद्य की विशेषता बताई गई है। इस वाद्य के साथ सुषीर वाद्य बय् भी बजाया जाता है।

- **डम खिं/ दमों खिं:**

डम खिं/ दमों खिं अन्य अवनद्ध वाद्यों की तुलना में बड़े आकार का एक विशेष वाद्य है। इस वाद्य के नाम में ऐसा माना जाता है कि मृदंग के मृ को हटाकर दंग का अपभ्रंश दमों या डम वाद्य हुआ।[(1)] यह वाद्य का विशेष नेवारी गुंला पर्व, बलि प्रथा के समय, विभिन्न नवदुर्गा नाच में प्रयोग किया जाता है। इस वाद्य को भैरव, कुमारी और महालक्ष्मी की प्रतिमा रखकर उनके समक्ष बजाया जाता है। जिससे यह वाद्य पूर्ण रूप से धार्मिक वाद्य कहा जा सकता है। इस वाद्य की बनावट को देखा जाए तो यह 20 इंच की लंबाई, दाएं भाग का मैदान का 9 इंच और बाएं मैदान का 10 इंच जितना व्यास होता है। संगीतज्ञों के अनुसार अलग-अलग जगह के प्रमाण से खिं वाद्य के आकार में थोड़ा बहुत परिवर्तन देखने को मिलता है। इस वाद्य में स्याही नहीं होती इसलिए बजाने के समय आंटा या स्याः बजि(एक प्रकार का पोहा) 2 या 2½ इंच की गोलाई पर लगाया जाता है। कहीं-कहीं अलग स्थानों में इस वाद्य के ऊपर भेड़ या च्यांग्रा(भेड़ का एक प्रकार) जानवर के सिंग लगाकर बजाने का प्रचलन है। इस वाद्य के साथ भुस्याः(घन वाद्य) और सुषिर वाद्य मुहालि वाद्य बजाया जाता है।

1. ब्रजाचार्य, मदनसेन/ नेपाः गाः या नेवाः बौद्धसांस्कृतिक लोकबाजा/ p-90

- **ज्व खिं:**

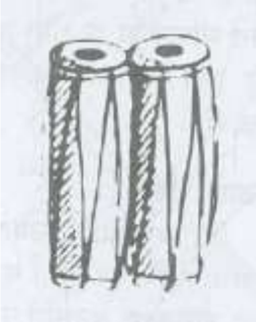

ज्व अर्थात जोड़ी। इसीलिए ज्व खिं में दो खिं वाद्यों को एक साथ रखकर चारमुखी वाद्य के रुप में बजाया जाता है। दोनों खिं को एक ही सुर में मिलाकर बजाया जाता है। इस वाद्य में नाट्यश्वर भगवान का चित्र अंकित किया होता है। यह वाद्य काठमांडू इंद्र जात्रा लगायत अन्य जात्रा पर्वों में बजाया जाता है।

- **याकः खिं:**

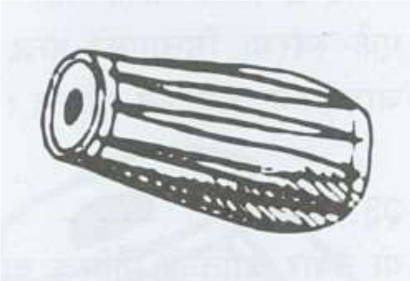

याकः खिं काठमांडू उपत्यका के नेवारी समुदाय का प्रसिद्ध लोकवाद्य है। याकः अर्थात् इसको एक के संदर्भ में लिया गया है। इस वाद्य वादन में केवल एक ही वाद्य बजाया जाता है। यह वाद्य को कमर में बांधकर दोनों हाथों से बजाया जाता है। इस वाद्य के आगे के भाग में नासः भगवान की पूजा में बलि दिए गए भेड़ का सिर जड़ित किया जाता है।

- **पस्ता खिं:**

पस्ता खिं वाद्य नेवारी बस्ती मध्यपुर थिमी में विशेष रुप से दाफा भजन मंडल में बजाया जाता है। इस वाद्य में भी अन्य अवनद्ध वाद्यों की तरह दोनों तरफ चमड़ी से आच्छादित किया जाता है

और दोनों तरफ स्याही लगाई हुई होती है। इस वाद्य को बजाते समय गले में लटकाकर दोनों हाथों से बजाया जाता है।

- **लाताः खिं:**

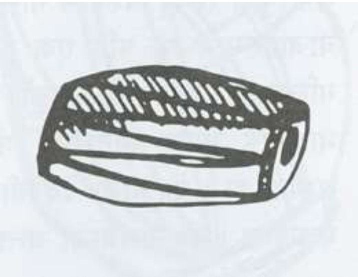

लाताः खिं विशेष रुप से भक्तपुर नगर में बजाया जाता है। इस वाद्य को नेवार समुदाय के विभिन्न उत्सव तथा नेकूजात्रा और अष्टमातृका

जात्रा वर्ग में बजाने की परंपरा है।

- **मगः खिं (मादल):**

मगः खिं वाद्य नेपाल में रहने वाले मगर जाति का वाद्य है। इसलिए इस वाद्य का नाम मगः खिं कहा गया है। यह संपूर्ण नेवारी जाति तथा पूरे नेपाल का प्रचलित लोक वाद्य है। इस वाद्य को अन्य जाति में मादल कहते हैं। मगर जाति का वाद्य होते हुए भी नेवारी लोगों ने इस वाद्य को अपने तौर तरीके से अपना लिया। इस वाद्य का विभिन्न जात्रा पर्व, मनोरंजनात्मक कार्यक्रम, विभिन्न नाच आदि में प्रयोग किया जाता है। इस वाद्य को कमर में बांधकर या गले में लटकाकर दोनों हाथों से आकर्षक ढंग से बजाया जाता है।

3:1:1:2 द्याः/धा वाद्य

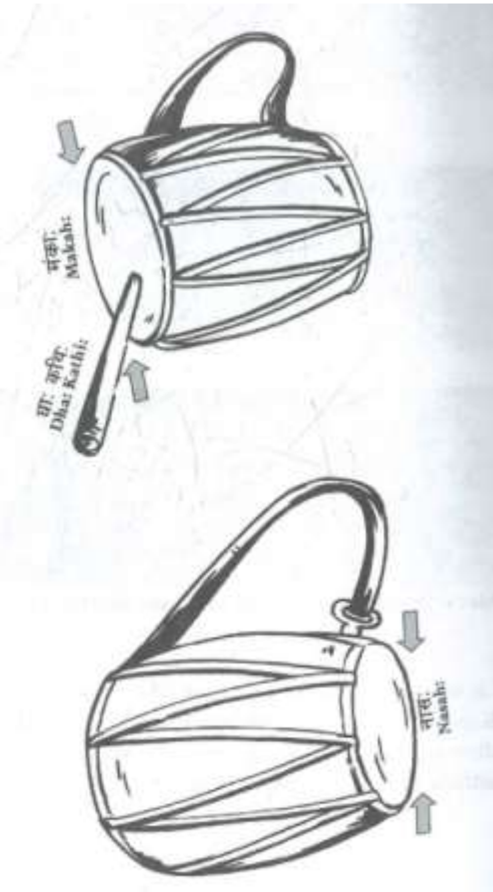

नेवारी संगीत में द्याः वाद्य को गुंला वाद्य के रूप में जाना जाता है। गुंला महिना श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से भाद्र शुक्ल प्रतिपदा तक मनाया जाता है। इस माह से विभिन्न चाडपर्वों की शुरुआत होती है। गुंला माह में प्रतिदिन सुबह बौद्धमार्गिओं का नित्यक्रम कुछ इस प्रकार होता है- सबसे पहले तीर्थ स्थल पर स्नान करके, गुंला वाद्य बजाकर, बहाल(नगर) परिक्रमा कर के, भजन, कीर्तन, स्त्रोत पाठ, व्रत, दान धर्म आदि करके धूम्रपान एवं मदिरापान आदि व्यसनों को छोड़ के सामान्य जीविका धारण करते हैं। इस प्रकार इस माह को मनाया जाता है और इसे धार्मिक और व्यवहारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना गया है। पूरे गुंला माह में विभिन्न बिहार, चैत्य आदि में परिक्रमा के समय जाने वाले वाद्यों के नाम कुछ इस प्रकार है: धाः, नाय् खिं, भुस्याः, छुस्याः, ता(तत् वाद्य) आदि। इन वाद्यों में विशेष 'धाः' वाद्य के समूह को गुंला वाद्य कहते हैं जिसमें धाः मुख्य वाद्य है।

लोक आख्यान के अनुसार गुंला वाद्य राजकुमार सिद्धार्थ का प्रिय वाद्य था। लुंबिनी (स्थान) में बसंत ऋतु के स्वागत के लिए यह गुंला वाद्य बजाया जाता था। तत्पश्चात जब कौशल के राजा विदुभ ने कपिलवस्तु पर हमला किया, उसके बाद कपिलवस्तु छोड़कर शक्य लोग काठमांडू में प्रवेश करने लगे। और साथ

में इन वाद्यों का भी आगमन होता गया। इसके बाद संभवतः लिच्छवि काल से ही गुंला वाद्य गुंला माह में बजाने की परंपरा शुरू हुई होगी।

"भाषा वंशावली में राजा विक्रम देव ने नेपाल के बौद्धमार्गीओं के लिए बौद्ध यात्रा गुंला में प्रारंभ की होगी ऐसा उल्लेख पाया गया है। इसी प्रकार राजा सिद्धिनरसिंह के राज्य समय में भयानक रोग फैल गया था। इस परिस्थिति के निवारण के लिए ज्योतिष एवं राजगुरु के साथ परामर्श करके शास्त्रीय संगीत के साथ गुंला वाद्य बजाकर नगर परिक्रमा करने से समस्या का समाधान होगा ऐसा बताया गया था। उसी समय से हर एक वर्ष इस वाद्य को बजाने की परंपरा निरंतरता इतिहास में पाई गई है।"[1]

द्याः वाद्य की बनावट अगर देखें तो लकड़ी को अंदर से खोखला कर के उसे उसके दाएं एवं बाएं भाग पर चमड़ा ढककर बनाया जाता है। यह वाद्य मध्यम आकार का होता है। दोनों तरफ के चमड़े को बांधने के लिए चमड़े को तान से कसा जाता है। खिं वाद्य जैसे द्याः वाद्य में भी बाई तरफ का गोलाकार बड़ा होता है जिसे 'मंकाः' कहते हैं और दाई तरफ का गोलाकार छोटा होता है जिसे 'नासः' कहते हैं। इस वाद्य को बजाने के लिए लकड़ी और हाथ दोनों का प्रयोग किया जाता है। बाई ओर लकड़ी से और दाई ओर हाथ से बजाया जाता है। द्याः वाद्य विशेषतः गुंला(श्रावण) माह में बजाया जाता है परंतु इस वाद्य को गुंला माह के अलावा विभिन्न बौद्ध धर्मावलंबी की बुद्ध पूजा, लाखे प्याखं (नाच), महाकाली प्याखं(नाच), आदि पर्व एवं परंपराओं में भी बजाया जाता है।[2] द्याः वाद्य के साथ ताः वाद्य (घन वाद्य), भुस्या वाद्य (घन वाद्य), मुहाली, पोंगा तथा बाँसुरी वाद्य (सुषिर वाद्य) संगत के रूप में बजाया जाता है। द्याः वाद्य का वादन बौद्ध धर्मावलंबियों जैसे शाक्य, बज्राचार्य के साथ-साथ अन्य नेवारी उपजातियां जैसे ताम्रकार, कःसा, मानंन्धर, तुलाधार इत्यादि करते हैं। वर्तमान में राजथला, श्रेष्ठ, महर्जन उपजाति के लोग भी इस वाद्य का वादन कर रहे हैं।

3:1:1:3 धिमय् वाद्य

धिमय् वाद्य नेवारी ज्यापू जाति का विशेष एवं लोकप्रिय वाद्य है। नेवारी जाति में विभिन्न उपजातियां है इनमें से ज्यापू जाति जिसको 'महर्जन' थर कहा जाता है उनका महत्वपूर्ण स्थान है। ज्यापू में ज्या का अर्थ है काम और पू का अर्थ है संपन्न करने वाला, अर्थात् कार्य को संपन्न करने वाला या

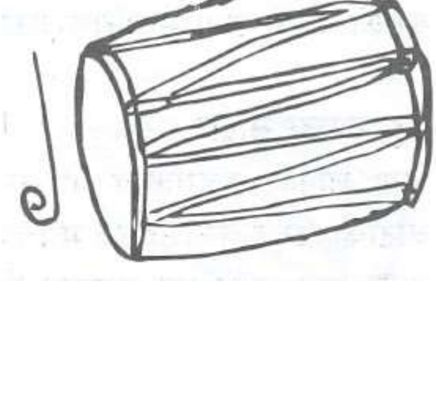

1. प्रजापति, सुभाषराम/ संस्कृतिभित्र/ p-37

2. शाक्य, यचु/ धाः बाजंया म्हसीका/ p-23

काम करने वाला जाति ज्यापू है। यह जाति भूमि से संबंधित अर्थात् कृषि कार्य करती है इसलिए ज्यापू लोगों को भूमिपुत्र भी कहा जाता है। संपूर्ण नेपाल में रहने वाली नेवार जाति में से लगभग 50% लोग ज्यापू जाति वाले है ऐसा अनुमान किया गया हैं। परंतु ज्यापू पूर्व काल से ही अपने कार्य में मेहनती, वफादार, हिम्मतवाले होते हैं। यह जाति के लोग दिन-रात अपने ही कार्य में व्यस्त रहते हैं इसलिए देश की राज्य सत्ता के निर्णायक बिंदु में भी नहीं दिखाई देते। अपने कार्य की व्यस्तता के कारण शिक्षा में भी सुस्ती दिखाई देती है। ज्यापू समाज के लोक वंशावलीकार स्वर्गीय नाति महर्जन के "स्वनिगः या संस्कृति, जाति वा इतिहास दुवाल" पुस्तक के उल्लेख अनुसार, उत्तर नेपाल से प्रवेश किए हुए किरात मंगोल ने नेपाल में राज्य किया। दक्षिण नेपाल से प्रवेश किए हुए लिच्छवि, मल्ल, शाह और राणा ने नेपाल में राज्य किया और वे उच्च पद में विराजमान है किंतु यह आदिवासी ज्यापू लोग दूसरे शासकों से शासित होने के अलावा स्वतंत्रता का अनुभव नहीं कर पाए।[(1)] इसका मुख्य कारण है शिक्षा का अभाव, अपने आप को समय ना देना, अन्य लोगों के साथ संगत की कमी इत्यादि माना जा सकता है।

ज्यापू जाति को मेहनत करने वाली जाति कहा जाता है। अपने कार्य की व्यस्तता के अलावा अपनी परंपरा से चलते आए हुए त्यौहार, पर्व, जात्रा इत्यादि को भी श्रद्धापूर्वक बचाएं रखने में सक्षम रहे हैं। ज्यापू जाति का मुख्य वाद्य धिमय् वाद्य, घुँङ्या, ताः, पोंगा, भुस्या, झ्याली इत्यादि है। अपनी संस्कृति के ध्वज को ऊंचा करने में सफल ज्यापू जाति प्रकृति पूजक बौद्ध धर्मावलंबी कहलाने में रुचि रखते हैं।

नेवारी संगीत में लोकप्रिय अवनद्ध वाद्य धिमय् लकड़ी को अंदर से खोखला कर दोनों तरफ चमड़ी से आच्छादित कर बनाया जाता है। धिमय् आकार में बड़ा होता है और उसमें भी धिमय् विभिन्न आकार के होते हैं, जैसे तगो(बडा) धिमय्, चिगो(छोटा) धिमय् आदि। लोकोक्ति अनुसार महादेव और भगवती की कोख से एक संतान का जन्म हुआ। वह संतान का लालन-पालन कौन करेगा यह विवाद के चलते दोनों ने उस संतान को अपनी ओर खींचना प्रारंभ हुआ। खींचते समय एक तरफ मांस और एक तरफ हाड़ अलग-अलग हो गया। इससे 'ख्याक' और कंकाल(मांस और हाड़) की उत्पत्ति हुई। इस अवस्था से महादेव विरक्त होकर पेड़ के टीड् को(लकड़ी) को वाद्य के रूप में बजाने लगे और उसी वाद्य को धिमय् कहा गया। इस आख्यान से धिमय् एक प्राचीन वाद्य है ऐसा प्रतीत होता है परंतु इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

नेपाल की अन्य जाति किरात, राई, च्याब्रुंङ और तराई वासियों के ढोल के समान ही धिमय् वाद्य का आकार प्रकार होता है। उसे बजाने के तरीके भी लगभग वैसे ही माने गए हैं। किरात काल के बाद

1. महर्जन, राजेंद्र/ हाम्रो सांस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू/ p-15

विभिन्न काल खंडों में च्याब्रुंङ और ढोल के जैसे धिमय् वाद्य भी परिष्कृत और व्यापक हुए है। धिमय् शब्द संस्कृत भाषा के 'डिण्डिम' शब्द से विकसित हुआ हो ऐसा माना है। 'डिण्डि' शब्द का अर्थ है अनुकरण। पाली भाषा में 'दिन्दिम', 'दण्डिम' और प्राकृत भाषा 'डिंडिम' शब्द का अर्थ है नगारा जो कि एक प्रकार का वाद्य है। "नेपाल भाषा में 'डिण्डिम' शब्द ढिमंड→ढेंमस→ढंयमस→धेमस→धिमस होते-होते धिमय् शब्द का प्रादुर्भाव हुआ। नेपाल संवत् 501 के अमरकोश 'ढंयमस' और 718 के अमरकोश में 'धेमस' शब्द का प्रयोग पाया गया है। उसी प्रकार नेपाल 866 के शुकबहत्तरी ग्रंथ 'धेमस' शब्द का प्रयोग हुआ है।"[1] इस प्रकार धिमय् विकास क्रम में एक अत्यंत प्राचीन वाद्य है ऐसा साबित होता है।

ज्यापू लोगों में प्रचलित यह वाद्य वर्तमान में ज्यापू तथा उपजाति लोग भी बजाते हैं। उपत्यका के हर स्थान में धिमय् वाद्य के साथ संगत के वाद्य अलग-अलग है। मुख्य धिमय् वाद्य के साथ भुस्याः वाद्य बजाया जाता है। इसके अलावा सिछ्याः, कंयपि, ताईनाई, प्वंगा और मुहालि वाद्य भी बजाया जाता है।

3:1:1:4 पछिमा (मृदंग)

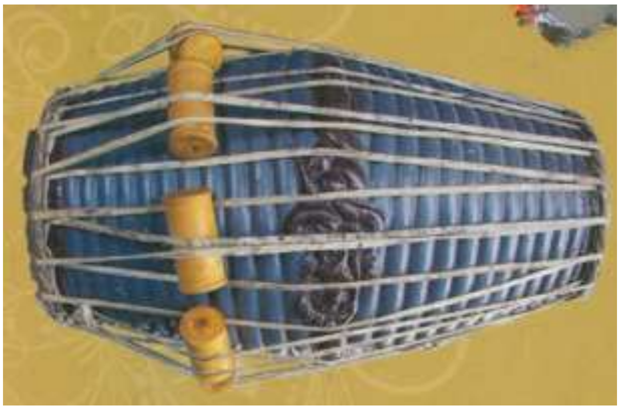

नेपाली संगीत में मृदंग को पछिमा कहा जाता है। यह वाद्य भारतीय शास्त्रीय संगीत में अति प्रचलित वाद्य है। नेवारी दाफा संगीत, भजन संगीत, जात्रा पर्व तथा विभिन्न नृत्य प्रकार में पछिमा वाद्य का प्रयोग किया जाता है। इस वाद्य को विशेष ज्यापु तथा गुभाजू (बज्राचार्य) द्वारा बजाया जाता है। पछिमा वाद्य का आकार देखा जाए तो बड़ा तथा छोटा ऐसे दो आकार का होता है। बड़े आकार का पछिमा जमीन पर पेंचा के ऊपर रखकर बजाया जाता है वही छोटे आकार का पछिमा गले में लटकाकर भी बजाया जा सकता है। इस वाद्य की लंबाई 20 इंच एवं दाएं तरफ की गोलाई लगभग 7 इंच की होती है जिसमें खरी लगाई हुई होती है और बाएं तरफ की गोलाई 8 इंच जितनी होती है। इस वाद्य में आटा या स्याबजि(एक प्रकार का पोहा) गूँद करके लगाया जाता है। उसका लगभग 5 फीट लंबा और बीच का फुला भाग 4 फिट

1. प्रजापति, सुभाषराम/ संस्कृतिभित्र/ p-63

आकार का ऐतिहासिक पछिमा भी देखने को मिलता है। जिसमें अन्य प्रकार के ताल भी बजाए जाते हैं। इस वाद्य के साथ देवी महाकाली, भैरवी, चर्या इत्यादि पौराणिक और गंभीर नृत्य किया जाता है।(1)

3:1:1:5 कान्तां डबडब (डमरू)

पूरे नेपाल में प्रचलित डमरु वाद्य नेवारी संगीत में भी प्रयोग किया जाने वाला विशेष वाद्य है। इस वाद्य को कान्तां डबडब कहते हैं। इस वाद्य का उपयोग नित्य पूजा, चाडपर्व तथा विभिन्न मंदिरों में किया जाता है। यह वाद्य मिट्टी, लकड़ी तथा धातु से बना होता है। इसका आकार छोटा होता है तथा बीच का भाग सिकुड़ कर बनाया जाता है जिसे धागे या तान से कसके बांधा जाता है। यह वाद्य एक ही हाथ से बजाया जाता है। नेवारी पर्व मोहनी(दशहरा) में, दुर्गा पूजा में तथा इन त्यौहारों के समय प्रत्येक घर में बजाया जाता है। नेपाल के हिमालय प्रदेश में लामा जाति दो प्रकार के डमरू बजाते हैं, बड़ा और छोटा डमरु। परंतु नेवारी संगीत में केवल छोटे आकार का डमरू बजाया जाता है।

3:1:2 सुषिर वाद्य

जो वाद्य में हवा भरने से अथवा हवा फूंकने से स्वर ध्वनि उत्पन्न होती है वह वाद्य सुषिर वाद्य कहलाते हैं, जो नेवारी संगीत में विशेष रुप से बजाए जाते हैं। इस वाद्य के विभिन्न प्रकार नेवारी दाफा संगीत, भजन, बारहमासे गीत, सुगम संगीत आदि में अलग-अलग तरीकों से बजाए जाते हैं। नेवारी संगीत में प्रचलित विभिन्न प्रकार के सुषिर वाद्य का वर्णन इस प्रकार है:

3:1:2:1 प्वंगा/ पोंगा:

प्वंगा वाद्य विशेष रूप में नेवारी दाफा संगीत में बजाया जाता है। यह वाद्य फूंक मारने से बजता है इसलिए यह सुषिर वाद्य के अंतर्गत आता है। यह वाद्य तांबे का बना होता है जिसकी लंबाई लगभग 36 इंच जितनी होती है। प्वंगा वाद्य दिखने में बांस की तरह होता है जबकि फूंकने का भाग छोटा गोलाकार और आवाज निकलने वाला भाग बड़ा गोलाकार होता है। प्वंगा वाद्य के तीन टुकड़े होते हैं जो बजाने के समय जोड़कर बजाए जाते हैं। इस वाद्य को उठाकर

1. (लोहानी)तिवारी, शोभा/ लोकसंगीतार्पण/ p-44

बजाने के समय संतुलन में रखने के लिए वाद्य की लंबाई के बराबर का बास बांध दिया जाता है। इस वाद्य को दो जन मिलकर जोड़ी में बजाते हैं। दाफा संगीत में इस वाद्य की भूमिका विशेष है। दाफा संगीत में बजाए जाने वाले प्रत्येक वाद्यों को संतुलित रखने का और आगे के कदम के बारे में जानकारी देने का काम प्वंगा करता है। इस वाद्य का काम मुख्य रूप में अन्य वाद्यों का संतुलन बनाए रखना है और इसी कारण जो भी इस वाद्य को बजाते है उसको दाफा संगीत में बजाए जाने वाले वाद्यों का ज्ञान होना अति आवश्यक होता है। वर्तमान में प्वंगा वाद्य को बजाने की परंपरा बहुत ही कम होने लगी है। वादकों की कमी के कारण अधिकतर दाफा समूह में बिना प्वंगा वाद्य के ही गायन करने लगे हैं।

3:1:2:2 मुहाली वाद्यः

मुहाली वाद्य एक सुषिर वाद्य है जिसके कई नाम है जैसे- म्वहाली, म्वाहाली तथा माप्ली, आदि। नेवारी भाषा में संबोधित मुहाली वाद्य को अन्य भाषा में शहनाई, शनाई आदि कहते हैं। नेवारी मुहाली वाद्य नेवारी जाति की उपजाति जोगी जाति द्वारा बजाया जाता है। जिसको जुगी, योगी, कपाली, कुश्ले, दर्शनधारी, बह्मकपाली नाम से भी जाना जाता है। इन जातियों के मतानुसार काम, क्रोध, मोह से मुक्त रहने वाले को 'जोगी' कहते हैं। अपने तंत्रोद्वारा रोगों से मुक्त करने वाला दर्शनधारी, कुश द्वारा उत्पत्ति हुई इसलिए कुश्ले, शैव संप्रदाय के छः भेदों में से चौथा भेद कापालिक होने से कपाली और नाथ संप्रदाय के साथ स्वस्थानी के समय अवधि जालंधर के भेष में कापालिक रूप धारण करके एवं डमरु बजाके भिक्षाटन करते हैं इसलिए उन लोगों को जोगी, जुगी, योगी कहा गया होगा।[1] नेवारी समाज में इनको 'त्वाः जं' अर्थात् नीची तह की उपजाति मानते हैं। यही जोगी अर्थात् कुश जाति ही मुख्य मुहाली वादक है। नेवारी समाज में संगीत क्षेत्र के मुख्य सुषिर वाद्य के अंतर्गत मुहाली वाद्य के मुख्य कलाकार 'कुशले' जाति के होते हैं, जो मध्यकाल के मल्ल काल से ही बजाते आए हैं। इस महत्वपूर्ण वाद्य के बिना नेवारी समाज के जात्रापर्व, मंगल कार्य अधूरे रहते हैं। इस वाद्य के वादक कुश्ले शगुनी जाति (शुभ कार्य करने वाली) के होने के कारण केवल मंगल कार्य के अतिरिक्त अन्य किसी कार्य में नहीं बजाते।

1. लाछि, गणेशराम/ अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा मध्यपूर/ p-6

मुहाली वाद्य में तीन भाग होते हैं। यह वाद्य को सतिसाल, सिसौ(पेड़ों के नाम) के बीच के भाग वाली लकड़ी को भीतर से खोखला करके बनाते हैं। सबसे आगे के खुले हुए भाग में धातु का उपयोग किया जाता है और फूंकने वाले भाग को कुल्फी, नल ताड, तारी पेड़ आदि के पत्तों से बनाया जाता है। इस वाद्य के विभिन्न प्रकार है जैसे- साधारण मुहाली, पूजा मुहाली, कुकि मुहाली, भमरा मुहाली, रसन मुहाली, नमोध मुहाली, गुजरति मुहाली, शनाई मुहाली, दमाई मुहाली, चाः तू (घुमा हुआ) मुहाली, देसी मुहाली आदि। नेवारी संगीत के अंतर्गत आने वाले सुषिर वाद्यों में विशेषतः मुहाली, बाँसुरी और बय् है, जिसमें वाद्य के बीच में छिद्र होते हैं। अन्य सुषिर वाद्यों में जैसे प्वंगा, काः, नेकू, हों, ध्वाति आदि में वाद्य के बीच छिद्र नहीं होते, इसलिए इन वाद्यों को एक ही सुर में बजाया जाता है।

3:1:2:3 नेकुं वाद्यः

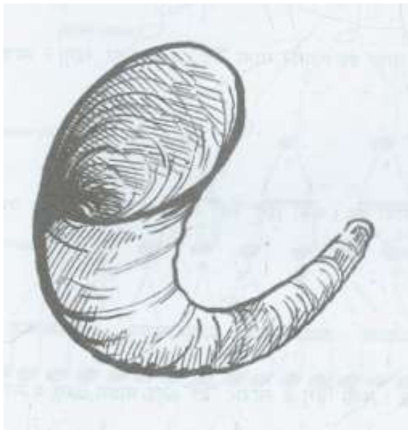

नेकुं वाद्य सुषिर वाद्य है जो भैंस के सिंग से बनाया जाता है। इसमें एक ही स्वर की ध्वनि निकलती है। यह वाद्य नेवारी परंपरा में गुंला(श्रावण) माह में पूरा महीना प्रातः नगर परिक्रमा में बजाया जाता है। इसके साथ धाः वाद्य और भुस्या वाद्य भी बजाया जाता है। यह वाद्य प्राचीन समय से बजाते आए हुए वाद्यों में से एक है। इसकी उत्पत्ति के विषय में जनकिंबदंती इस प्रकार है- "प्राचीन समय में शशिपट्टन नाम का एक देश था। उस देश की रानी सुलक्षणा अत्यंत शुद्ध आचरण और भक्ति भाव वाले स्वभाव की थी परंतु राजा सिंहकेतु जंगल में जाकर रोज शिकार करके अत्याधिक मांस का सेवन करने वाला था। रानी ने अपने पति को इस विषय में बहुत बार समझाया किंतु राजा ने उसकी एक नहीं सुनी। एक दिन राजा की अकाल मृत्यु हो गयी और रानी अपने पति को इन पापों से मुक्त कराने के लिए राजा के साथ सती प्रथा के चलते वो भी स्वर्गवासी हुई। यमलोक में संपूर्ण पाप, पुण्य के भोग के बाद दोनों का जन्म उसी देश में एक ब्राह्मण कुल में होता है। जहां रानी अपने पुण्य कर्मों के कारण ब्राह्मणी के रूप में और राजा अपने पापों के कारण भैंस के रूप में जन्म लेता है और दोनों साथ में बड़े होते हैं। बड़े होने के बाद रानी अपने पिछले जन्म की बात याद करती है और उसे ज्ञात होता है कि उसके पति ने भैंस की अवतार में जन्म लिया है। तत्पश्चात ब्राह्मणी भैंस की सेवा करने लगती है। एक दिन भैंस को जंगल में दूसरे जानवर मारकर खा जाते हैं और उस भैंस की हड्डियां छोड़ कर चले जाते हैं। ब्राह्मणी इन सब बात को जानने के बाद सारी हड्डियां लेकर घर वापस आ जाती है और एक स्थान में दोनों सिंग के अलावा बाकी सारी हड्डियों को रेत के नीचे दफना देती है। उसी स्थान में ब्राह्मणी एक छोटा सा चैत्य निर्माण करके बाएं सिंग को गजूर(मंदिरों में सबसे

ऊंचा स्थान) बनाकर और दाएं सिंग से रोज पानी चढ़ा के और उसे वाद्य बनाकर त्रिरत्न शरण नामोच्चारण कर फूंक मार के बजाकर उसका पति जल्दी ही मनुष्य रूप में जन्म ले ऐसी प्रार्थना करती है। एक माह तक हर रोज उस चैत्य में जाकर सिंग को फूंक कर बजाने के बाद 31 वें दिन उस सिंग से एक व्यक्ति निकलता है और धीरे-धीरे बड़ा होकर सामने आता है। ब्राह्मणी की तपस्या सफल होती है और दोनों एक दूसरे को पिछले जन्म की बातें ज्ञात होती है। इस तरह यह सारी बात ब्राह्मणी के माता-पिता को ज्ञात होने के बाद दोनों की शादी कर देते हो और उस राज्य के राजा के स्वर्गवास के बाद ब्राह्मण को राजा के रूप में पद प्रदान करते हैं। तत्पश्चात केतु राजा अपनी पत्नी के पुण्य कार्यों के कारण पाप कर्म से मुक्त होकर जीवनदान मिलने की खबर हर जगह फैलने लगती है।

मल्ल शासनकाल के श्री सिद्धि नरसिंह मल्ल को अपने गुरुवर से यह बात का ज्ञान होता है। उन्हीं के राज्यकाल में आषाढ़ - श्रावण मास में जब राज्य की प्रजा रोगों से परेशान थी तब उस स्थिति में भैंस के सिंग को नववाद्य के रूप में बजाकर, त्रिरत्न नाम उच्चारण करके, बत्तीस ग्वारा करके पूरे नगर के चैत्य, देवालय, शिव मंदिरों में परिक्रमा करके राज्य की प्रजा को रोगों से मुक्त किया था।"[1]

यह बातों को जानकर तत्कालीन समय में नगरों को रोगों से मुक्त करने के लिए प्रत्येक वर्ष इस परंपरा को निरंतर निभाया जाता है और यह परंपरा वर्तमान तक नेवारी समाज की परंपरा में कायम है। इस प्रकार नेवारी नेकुं वाद्य मल्ल काल से नए वाद्य के रूप में प्रयोग किया गया हुआ ऐसा अनुमान किया गया। नेकुं वाद्य की बनोट प्रायः अर्धचंद्राकार होती है। इस वाद्य में विभिन्न प्रकार के नेकुं होते हैं, जैसे कि- 'तपु नेकुं' जो गोलाई में बड़े आकार का होता है, दूसरा 'चिपु नेकुं' और तीसरा टिक्लीया जिसमें बांस की लकड़ी को जोड़कर लंबा नेकुं बनाकर उसे बजाया जाता है और चौथा प्रकार सिंहली(हिटिमँग) जो बौद्ध जाति में उपयोग में लिया जाता है। इसमें कलात्मक आकृति अंकित होती है जो दिखने में सुंदर होती है। इस प्रकार अलग-अलग नेवारी बस्ती के अनुसार नेकुं वाद्य के अन्य प्रकार भी प्रचलित हो सकते हैं। नेकुं वाद्य जितना बड़ा आकार का होता है उतने मंद्र स्वर और यदि पतला और छोटा आकार का हो तो उसका स्वर ऊंचा होता है। इस वाद्य की ध्वनि करुण रस प्रदान करती है।

नेकुं वाद्य के बोल केवल सांकेतिक भाषा में होते हैं। यह वाद्य बजाते समय बुद्धधर्मसंघ, त्रिरत्न शरण, आर्यतारा शरण आदि को मन में याद करते हुए बजाने की परंपरा रही है। सुनने में एक ही तरह लगने वाले बोल इस वाद्य पर अलग-अलग नेवारी स्थान के हिसाब से अलग-अलग होते हैं। कुल 7 तालों में इस तरह के बोल बजते हैं[2]:

---

1. शाक्य, धर्मरत्न/ झीगु बाजा झीगु संस्कृति/ p-ज
2. ब्राजाचार्य, मदनसेन/ नेपाः गाः या नेवाः बौद्ध संस्कृति लोकबाजा/ p-29

1) **चो ताल**

क) चें ची धं (मामेय्यागु नेकुतिं (भैंस का प्रकार))

ख) हू हू (थुमेय्यागु नेकुतिं (भैंस का प्रकार))

क) गरजक चिकिधं (मामेय्यागु नेकुतिं (भैंस का प्रकार))

ख) हू हू (थुमेय्यागु नेकुतिं (भैंस का प्रकार))

2) **जति ताल**

क) चें चीधं गरजक चिकिधं

ख) हू हू हू

क) गरजक दँ , गरजक चिकिधं

ख) हू हू हू

3) **प्रताल**

क) चें चिकिधं

ख) हू हू

4) **अष्टताल**

क) चें चिकिधं

ख) हू हू हू

क) गरजक चिकिधं
ख) हू हू हू

5) **पलिमा ताल**

क) चें चिकिधं

ख) हू हू

6) **गन्ध ताल**

क) चें चिकिधं

ख) हू हू

7) **एक ताल**

क) चें... चिकि... धं

ख) हू... हू...

क)गरजक.... चिकि.... धं

ख)हू.... हू....

3:1:2:4 बाँसुरी:

सुषिर वाद्य के अंतर्गत आने वाला बाँसुरी वाद्य नेवारी संगीत का प्रचलित एवं लोकप्रिय वाद्य है। बाँसुरी वाद्य नेवारी संगीत में विभिन्न पर्व, उत्सव, त्योहारों में बजाई जाती है। परंपरागत रूप से बाँसुरी लकड़ी को अंदर से खोखला कर के उसमें छेद बनाकर बनाई जाती है। वर्तमान समय में बांस की लकड़ी का प्रयोग अधिक होने लगा है। बाँसुरी वाद्य में कुल सात छेद होते हैं और अधिकतर इसी बाँसुरी का प्रयोग किया जाता है। बाँसुरी में घोर(मंद्र), माझौ(मध्य) और तिप(तार) सुर का प्रयोग होता है। बाँसुरी में दो प्रकार पाए गए हैं- एक सीधा (मुरली की तरह फूंक लगाकर बजाई जाने वाली) और दूसरी टेढ़ा करके बजाई जाने वाली। जो मुरली की तरह बजाई जाती है उसे ककू वय्, बय्चा, बसः इत्यादि नाम से जाना जाता है। इस वाद्य को नेवारी ज्यापु लोग अपने समूह में बजाते हैं। सभी प्रकार की बाँसुरी के साथ खिं, द्या, पछिमा इत्यादि वाद्य साथ संगत में बजते हैं। वर्तमान समय में पुरुष तथा महिलाएं दोनों बाँसुरी बजाने लगे हैं। बाँसुरी में विभिन्न ऋतुकालीन गीत, लोकधुन तथा फिल्मी गीत बजाए जाते हैं।

3:1:2:5 काः वाद्य:

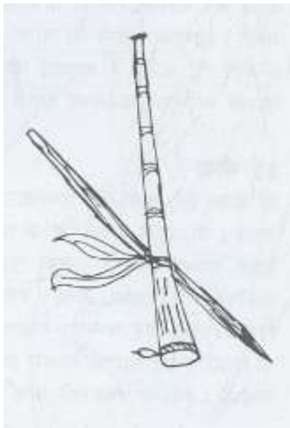

काः वाद्य नेपाली संगीत के प्राचीनतम वाद्यों में से एक माना जाता है। इस वाद्य को जयतुर्ज्या, इन्द्रबाज और काःबाज भी कहते हैं। नेवारी काः वाद्य नेवारी जाति के धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यों में प्राचीन काल से प्रयोग में होता आया हुआ वाद्य है। हालांकि इस वाद्य की उत्पत्ति एवं प्रादुर्भाव की बात यकीन से कहना मुश्किल है। इस वाद्य को मंगल कार्य

जैसे जात्रा पर्व, त्यौहार आदि और मृत्यु पश्चात शवयात्रा के समय बजाया जाता है। मंगल कार्य में बजाने वाले बोल को घर के एक बंद कमरे में गुरु द्वारा सिखाया जाता है परंतु शव यात्रा के समय बजने वाले बोल शव यात्रा के समय ही सिखाया जाते हैं। उस बोल को अगर घर में सिखाया गया तो उसे अपशकुन माना जाता है। "परापूर्व काल में मंगल कार्य में बजने वाले बोलो को सिखाने के लिए 10 से 12 व्यक्ति बैठ सके इतना मिट्टी का विशाल बर्तन

बनाकर उसके अंदर बैठकर सिखाया जाता था ताकि बाहर वाले किसी को सुनाई ना दे। अब यह परंपरा पूरी तरह खत्म हो चुकी है।"[1]

इस वाद्य को बजाने का अर्थ देवराज इंद्र भगवान को संदेश भेजना है। मृत्यु के बाद काः वाद्य बजाने से स्वर्ग में वास मिलेगा इस तरह का जन विश्वास रहा है। काः वाद्य की बनावट अगर देखी जाए तो यह वाद्य साढ़े पांच फुट या छः फुट की गोलाकार लंबाई का शुद्ध तांबे का बना होता है। इस वाद्य के तीन टुकड़े होते हैं जो बजाने के समय जोड़कर बजाए जाते हैं। यह वाद्य में हवा फूंकने वाला छोटा आकार गोल होता है जिसे 'नासः त्वा' कहते हैं। फूंकने के भाग से वाद्य की गोलाई बड़ी होकर आवाज निकलने तक सबसे बड़ा गोलाकार होता है अर्थात फूंकने वाले भाग से वाद्य के अंतिम भाग तक गोलाकार का व्यास बढ़ता जाता है। इस वाद्य को बजाने के लिए और पकड़ने के लिए सहयोग हो इसलिए तिँकचि(एक बांस का प्रकार) बांधा होता है। इस वाद्य के साथ नायखिं वाद्य बजाया जाता है। इस वाद्य के बोलो को गुप्त रखा जाता है जो केवल गुरु और शिष्य के बीच ही सीमित रहता है।

3:1:3 घन वाद्य:

घन वाद्य अर्थात् जब कोई ठोस धातु या पदार्थ से आघात किया जाता है तब स्वर उत्पन्न होता है उन वाद्यों को घन वाद्य कहते हैं। नेवारी वाद्य परंपरा में घन वाद्यों के विभिन्न प्रकार बताए गए हैं जो इस प्रकार है:

3:1:3:1 ताः वाद्य:

ताः एक घन वाद्य है। नेवारी संगीत में इस वाद्य को ताल को नियंत्रण में रखने वाला वाद्य मानते हैं। हरेक प्रकार के संगीत जैसे दाफा संगीत, भजन, स्तुति, वज्रयान चर्या गीती में, विभिन्न प्रकार के नृत्यों में इस वाद्य को अनिवार्यतः बजाया जाता है।

हरेक प्रकार के वाद्य यंत्र के साथ इस वाद्य का प्रयोग होने से ही यह वाद्य की व्यापकता बढ़ गई है और आठवीं शताब्दी के विभिन्न मूर्तियों में ताः वाद्य वादन की आकृति मिलने से इस वाद्य की प्राचीनता स्पष्ट होती है।[2] ताः वाद्य भारतीय संगीत की मंजीरा वाद्य के समान होता है। ताः वाद्य की बनावट का विश्लेषण किया जाए तो यह ज्ञात होता है कि ताः वाद्य अष्ट धातुओं के मिश्रण से बनाया जाता है। ताः

1. महर्जन, राजेंद्र/ हाम्रो सांस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू/ p-141

2. प्रजापति, सुभाषराम/ संस्कृतिभित्र/ p-75

दो, तीन या छः इंच की गोलाकार लंबाई एवं पांच से दस मिलीमीटर की मोटाई और लगभग एक इंच जितनी गहराई इस वाद्य में होती है। गहरे भाग में छोटा सा छेद होता है जिसमें डोरी लगाई जाती है, जिससे आसानी से डोरी को पकड़ कर इस वाद्य को बजाया जा सके। इस वाद्य में केवल दो बोल ही बचते हैं- 'तिं' और 'छु'। 'तिं' उच्च स्वर का और 'छु' बोल नीचे स्वर का होता है। इस वाद्य में यदि धातु का मिश्रण सही तरह से है तब वाद्य वादन की ध्वनि उतनी ही मीठी सुनाई देती है।

नेवारी परंपरा अनुसार ताः वाद्य को बजाने से पहले तांत्रिक विधि द्वारा पूजा की जाती है उसके बाद ही गुरु अपने शिष्य को बजाने के लिए देते हैं। अगर इस विधि को नहीं अपनाया तो उस वाद्य में सीद्धि नहीं होती और सुर में भी नहीं बजता ऐसा जनविश्वास है। नेवारी संगीत में ताः वाद्य को प्रमुख माना जाता है इसलिए जो व्यक्ति इस वाद्य का वादन करते हैं उस व्यक्ति को प्रमुख वादक मानते हैं।

3:1:3:2 बभू/ ख्वालमलि:

बभू या ख्वालमलि घन वाद्य के अंतर्गत आयेगा। यह वाद्य विभिन्न धातुओं के मिश्रण से बना होता है। यह वाद्य गोलाकार आकार का होता है जो ताः वाद्य से थोड़ा सा बड़ा और पतला होता है। इस वाद्य की चौड़ाई 4.5 इंच की होती है। बभू जोड़ी वाद्य है। इसके बीच के भाग में छेद होता है जिसमें डोरी लगाई जाती है। इसी डोरी की सहायता से इसको पकड़कर आमने-सामने टकराकर बजाया जाता है। दाफा संगीत में इस वाद्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस वाद्य में एक साथ दो से चार जोड़ी बभू वाद्य का प्रयोग होते हैं जिससे दाफा संगीत भरा हुआ सुनाई देता है।

3:1:3:3 भुस्या:

भुस्या वाद्य बभू वाद्य की तरह एक घन वाद्य है जो अष्ट धातु से बना होता है। यह वाद्य बभू की तुलना में बड़ा होता है, जिसका गोलाकार 10 इंच जितना होता है। इस वाद्य का घनत्व कम होता है इसलिए बजाते समय आवाज ज्यादा सुनाई देती है। इस वाद्य के बीच भाग में गहराई ज्यादा होती है जिस में छेद करके डोरी बांधी जाती है ताकि बजाते समय पकड़ने में आसानी हो। भुस्या वाद्य की संगत द्याः वाद्य, धिमे वाद्य, नाय खिं वाद्य के साथ होती है। नेवारी हरेक पर्व तथा जात्रा पर्व में धिमे और भुस्या वाद्य की गूंज ज्यादा मात्रा में सुनने को मिलती है। इस वाद्य की ध्वनि ज्यादा होने से दर्शक

तथा श्रोताओं का ध्यान आकर्षित होता है। नेवारी परंपरा में विशेष प्रकार से नृत्य होता है जिसे लाखे नाच कहते हैं, उसमें भी खास धिमे वाद्य के साथ भुस्या वाद्य अनिवार्य रूप में बजाया जाता है।

3:1:3:4 छुस्या:

छुस्या वाद्य भुस्या वाद्य से छोटा और बभू/ ख्वालमलि वाद्य से बड़े आकार का घन वाद्य है। इस वाद्य को विशेष नाय खिं, द्याः तथा धिमे वाद्य के साथ बजाया जाता है। वादकों का कहना है कि इस वाद्य में ज्यादा कंपन मात्रा होती है। यह एक ताल वाद्य है इसलिए ताल की मात्रा मजबूत रखने का कार्य करता है। छुस्या वाद्य की बनावट भी भुस्या वाद्य जैसी होती है केवल दिखने में उससे छोटे आकार का होता है।

3:1:3:5 तिनकुने/ तिनतिनचा:

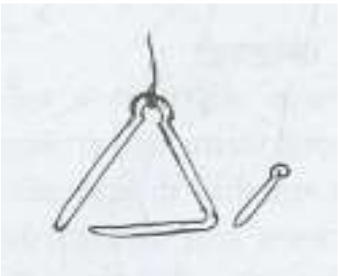

तिनकुने वाद्य त्रिभुज आकार का बना हुआ ताल वाद्य है। यह वाद्य धातु का बना होता है। त्रिभुज आकार के होने से नेवारी संगीत में 'स्वकुंला' भी कहते हैं। इस वाद्य को दाफा भजन तथा मठ मंदिर में पूजा विधि के समय ताल वाद्य के रुप में बजाया जाता है।

3:1:3:6 घौ/ केयपुई:

घौ या केयपुई वाद्य एक घन वाद्य है जो धातु से बना होता है। यह वाद्य नेवारी मूल वाद्य धिमे और नासः धिमे के साथ बजाया जाता है। यह वाद्य गोलाकार होता है जिसे लकड़ी की सहायता से बजाया जाता है, जैसे पाठशालाओं में घंटी बजाई जाती है। इस वाद्य का बीच वाला भाग दबा हुआ होता है। इसमें ट्वांग, टवांग जैसी ध्वनि निकलती है। संगत करते समय यह वाद्य ताली, खाली, सम देने का काम करता है।

3:1:3:7 ताइनाई:

ताइनाई वाद्य काठमांडू का प्रचलित घन वाद्य है जो शुद्ध काँस्य धातु का बना होता है। यह वाद्य दिखने में गोलाकार थाली जैसा होता है। इस वाद्य को डोरी से लटकाकर लकड़ी की सहायता से बजाया जाता है। इस वाद्य को विशेष रूप में विभिन्न देवी नाच में प्रयोग में लिया जाता है।

3:1:3:8 गँ:

काठमांडू उपत्यका में हिंदू परंपरा के अंतर्गत विभिन्न भगवान के मंदिर अनगिनत रूप में देखने को मिलते हैं। प्रत्येक मंदिर तथा दरबारों के नजदीक गँ(घण्टा) वाद्य जो घन वाद्य के अंतर्गत आता है वह लटकाकर रखा जाता है। इस वाद्य को बजाने से एक गूंजयुक्त ध्वनि सुनाई देती है। गँ वाद्य विभिन्न आकार का देखने को मिलता है। गँ वाद्य विभिन्न धातुओं का मिश्रण करके बनाया जाता है। इस वाद्य के विभिन्न प्रकारों में से एक छोटा गँ वाद्य, जिसे मंदिर के प्रवेश द्वार पर, मठ मंदिर तथा पाटि पौवा (Open air theatre) में रखा जाता है उसे क्रमशः ज्वाय गँ एवं फय् गँ कहते है। मध्यम आकार का गँ तथा बड़े आकार के गँ वाद्य को मंदिर तथा दरबारों में रखा जाता है। "इन गँ वाद्यों में तांत्रिक शक्तियों का आभास किया जाता है, जैसे भक्तपुर के एक मंदिर में रोगव्याधि का नाश करने के लिए तांत्रिक शक्तियों से उसका निर्माण एवं उसकी स्थापना हुई थी ऐसा ऐतिहासिक कथन प्रचलित है। यह घंटा बजाने से सियाल और कुत्ता आदि जानवर रोना शुरू करते हैं ऐसा जन विश्वास है।"[1] काठमांडू उपत्यका में काठमांडू दरबार, ललितपुर तथा भक्तपुर दरबार के सामने सबसे बड़े गँ व्यवस्थित रूप में प्राचीन समय में रखे गए थे जो आज भी प्राप्त है। ऐसा माना जाता है कि गँ वाद्य देवी आह्वान के लिए तांत्रिक विधि अनुसार बनाया गया है, जिसे दिव्य घंटा भी कहा जाता है। इन तीनों गँ में से उल्लेखित प्रमाण के आधार पर सबसे पुराना घंटा भक्तपुर स्थान का माना गया है। इस प्रकार नेवारी संगीत में घंटा वाद्य को भी अलग विशेष स्थान प्राप्त हुआ है।

3:1:3:9 घंघला/ घंगला:

घुंघरू वाद्य को नेवारी भाषा में घंघला या घंगला वाद्य कहा जाता है। नेवारी संगीत के अलग-अलग नृत्य जैसे लाखे नाच, द्यः नाच आदि विभिन्न प्रकार के नृत्यों में घंघला वाद्य प्रयुक्त होता है। इस वाद्य को पैरों

1. महर्जन, राजेंद्र/ हाम्रो सांस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू/ p-150

में, कमर पर तथा हाथ में बांधकर नृत्य किया जाता है। घंघला वाद्य नृत्य की सुंदरता को श्रृंगारित करने के लिए प्रयोग हो रहा है ऐसा मानना है।

3:1:4 तत् वाद्य:

तत् वाद्यों की श्रेणी में तारों द्वारा स्वरों की उत्पत्ति मानी गई है जैसे वीणा, सितार, इसराज, सारंगी इत्यादि। नेवारी संगीत विधा में अन्य वाद्य प्रकारों की तुलना में तत् वाद्यों का प्रकार निम्न माना गया है। कुछ प्रचलित तत् के प्रकार कुछ इस प्रकार है:

3:1:4:1 पिँवाचा:

पिँवाचा वाद्य उपत्यका की नेवारी जाति के ज्यापु लोगों का वाद्य है जो तत् वाद्य है। वर्तमान में इस वाद्य का प्रयोग अल्प हो चुका है। इस वाद्य को 'नेपाली लोकबाजा संग्रहालय' द्वारा खोज तथा अनुसंधान करके पुनः प्रयोग में लाया गया है।[1] नेवारी संगीत में इस वाद्य को नेपाली लोकगीत तथा देव देवी के भजनों के प्रारम्भ में बजाया जाता है। यह वाद्य देखने में इकतारा वाद्य के समान है परंतु इसमें दो तार होते हैं। इस वाद्य को बजाने के लिए हाथ या बो का प्रयोग किया जाता है। कुछ दाफा संगीत के गायकों का मानना है कि प्राचीन समय में इस वाद्य को दाफा भजनों में भी बजाया जाता था।

3:1:4:2 याकुचा बभू/ याक्रमुको:

तत् वाद्य के अन्तर्गत याकुचा बभू या याक्रमुको वाद्य ज्यापु लोगों का पारंपरिक वाद्य है। इस वाद्य को बाहों के नीचे रखकर बजाया जाता है इसलिए इसका नाम याक्रमुको रखा गया होगा ऐसी मान्यता है। यह याकुचा बभू या याक्रमुको दाएं तबले जितने आकार का, लकड़ी को अंदर से खोखला कर के बाहर के एक तरफ को बकरी का चमड़ा लगाकर, बीच भाग में छेद बनाकर तार को जोड़कर बनाया जाता है। इस वाद्य को बजाने के लिए एक हाथ से कुरेद कर दूसरे हाथ से तार को खींचकर बजाया जाता है। इस वाद्य का प्रयोग विभिन्न नेवारी चाडपर्व तथा नृत्य में किया जाता है।

1. महर्जन, राजेंद्र/ हाम्रो सांस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू/ p-145

नेवारी संगीत में चारों प्रकार के वाद्यों को परंपरागत रूप में बजाने की परंपरा चली आई है। प्रत्येक वाद्य का अपना अलग महत्व है। पर्वो और त्यौहारों के अनुसार वाद्य तथा गायन करने की परंपरा है। यह संगीत का संरक्षण हो पाने के कारण ही गुरु शिष्य परंपरा, नेवारी जाति में अपने जात, थर के अनुसार वाद्यों को सिखाने की परंपरा चली आ रही है। हालांकि वर्तमान में यह मान्यता थोड़ी ढीली हो रही है। नेवारी संस्कृति में जिस जाति के लोगों का पेशा ही वाद्य वादन है उन घरों में बचपन से ही अर्थात् 5 से 11 वर्ष की उम्र में बालकों का कर्म संस्कार किया जाता है जिसे 'कय्तापूजा (व्रतबंध)' कहते हैं जो हिंदू नेवारों की परंपरा रही है और बौद्ध नेवारों का 'बरे छुये' करने के बाद अपना वाद्य वादन विधिवत रूप में सिखाया जाता है। नेवारी संगीत में पेशेवर वादकों की साधना के कारण ही अपने देश की लोक संस्कृति के संगीत क्षेत्र में उत्थान देने का कार्य हो पाया है परंतु वर्तमान समय में केवल वाद्य वादन तथा गायन से अपनी गृहस्थी को संभालना मुश्किल हो चुका है। इसके कारण तथा अन्य सामाजिक कारणों की वजह से मुख्य वादक दूसरा पेशा अपनाने के लिए विवश है और इसके कारण वाद्य वादन में कमी महसूस हो रही है।

इसी बात को ध्यान में रखकर वर्तमान समय में विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। प्राचीन समय से केवल पुरुषों को ही गायन तथा वादन करना था ऐसी मान्यता थी परंतु वर्तमान में उस परंपरा को तोड़कर महिलाएं भी सहभागी होने लगी है। महिलाओं को भी दाफा गीत गायन तथा वाद्यों की तालीम प्राप्त होने लगी है और अति सुंदर प्रस्तुतीकरण देखने को मिल रहे हैं। इसी के साथ-साथ पाठ्यक्रम विकास केंद्र ने माध्यमिक तह के ऐच्छिक संगीत(वाद्य वादन) का पाठ्यक्रम तथा त्रिभुवन विश्वविद्यालय संगीत स्नातक, काठमांडू विश्वविद्यालय स्नातक तथा स्नातकोत्तर तह के पाठ्यक्रमों में भी शामिल किया है। जिससे वाद्यों का व्यापक रूप बढ़ने लगा है। "नेपाल के परंपरागत वाद्यों के संवर्धन करने के उद्देश्य से 'सेभ कल्चर' नामक संस्था ने 1995 काठमांडू उपत्यका में बाजा महोत्सव आयोजित किया था। उसी तरह ज्यापु महागुथी ने नेपाल संवत् 1115 में ज्यापु पुचः ओमबहाल में ऐतिहासिक धिमे बाजा प्रतियोगिता की थी और केसेट्स भी निकाले गए थे।[(1)]" इस प्रकार विभिन्न संघ संस्था द्वारा अपने पारंपरिक संगीत के उत्थान के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन करते रहे हैं।

नेवारी संगीत के गायन तथा वादन के मजबूत संबंध है। विभिन्न गायन में विभिन्न वाद्यों का प्रयोग होता है। त्यौहार, पर्व, जात्रा, सामाजिक कार्य में संगीत की बेजोड़ भूमिका रहती है। हर एक वाद्य का अलग अलग महत्व है, बजाने की शैली तथा बोल फरक फरक है। इन्हीं बोल तथा साथ संगत में बजाए जाने वाले बोल को गुरु शिष्य परंपरा अनुसार कंठस्थ रूप में सिखाना पड़ता था क्योंकि लिखकर सिखाने

---

1. प्रजापति, सुभाषराम/ संस्कृतिभित्र/ p-65

की परंपरा नहीं थी। इसलिए संगीतकारों का कहना है कि वाद्य के बोलो का मौलिक तरीके से विकास हुआ। वह विकास यह है कि बोलो को कोई गीत या गेयात्मक टुकड़ा एवं गद्यांश के रूप में बनाया, जिससे वह बोल लंबे समय तक याद किए जा सकते थे। इस प्रकार के गद्यांश उस समय की सामान्य जनजीवन की प्रस्तुति, हास्य व्यंग्य से भरपूर प्रस्तुति पाई गई है। कुछ अश्लील ढंग के गद्यांश भी पाए गए है। जन जीवन में प्रचलित अश्लील भाषा बोल को सबसे पहले 'वेग्नर' द्वारा प्रकाशित पुस्तक में प्राप्त होता है। उनकी पुस्तक 'द धिमे बाजा ऑफ़ भक्तपुर' में कुछ कुछ बोल इस प्रकार के समावेश किए गए थे। इस गद्यांश के जरिए प्राचीन समय के जन-जीवन, राजतंत्र, शासन-प्रणाली, संस्कृति, रहन-सहन के बारे में जान सकते हैं एवं परंपरागत कलाकारों के मनोभाव नजदीक से जान पड़ते हैं। संगीत एक पवित्र साधना है। भले ही कलाकारों ने वाद्य के बोल को अश्लील ढंग का शब्द प्रयोग किया होगा परन्तु उसका केवल एकमात्र उद्देश्य यही होगा कि अपनी संस्कृति को बचाए रखना और भविष्य में संगीत कला को नव पीढ़ीयों तक पहुंचाना, ऐसा शोधार्थिनी का मानना है।

3:2 विभीन्न वाद्यों के बोल एवं उनका विस्तार

वर्तमान में समय और युवा पीढ़ी की मांग के अनुसार गायन तथा वाद्य गुरुओं ने गायन को स्वरलिपि तथा वादन में संबंधित वाद्य के बोलों को लिखित स्वरूप देना प्रारम्भ कर दिया है। कुछ साक्षात्कार तथा कुछ पुस्तकों में उपलब्ध विभिन्न वाद्यों के बोल तथा उसके विस्तार कुछ इस प्रकार है:

वाद्य के बोलों को सर्वप्रथम (1) द्यः ल्हायगु (2) छुमा (3) न्हया (चलती) (4) गौ और अंत्य में (5) त्वाः ल्हायेगु करके बजाया जाता है, चाहे गायन के साथ हो या केवल वाद्य के वादन के साथ।[1]

(1) **द्यः ल्हायगु:** नेवारी संगीत परंपरा में सर्वप्रथम अपने प्रस्तुतीकरण के पूर्व नाट्येश्वर भगवान की आराधना का स्वरूप प्रदर्शित किए जाने वाली प्रस्तुति को द्यः ल्हायगु कहते हैं। यह रचना छोटी सी होती है।

(2) **छुमा:** छुमा कोई भी ताल बजाने से पूर्व बजायी जाने वाली छोटी उठान के रूप में होती है।

(3) **न्हया (चलती):** छुमा बजाने के बाद न्हया बजाया जाता है, जो लंबे समय तक बजाया जाता है। न्हया को चलती के बोल भी कहते हैं। दाफा गायन में पूर्व आलाप के बाद गायन के साथ संगत में बजाया जाता है।

(4) **गौ:** गायन तथा वादन में न्हया बजाते बजाते बीच में विश्राम पूर्वक गौ बजाने का चलन है। इसकी रचना छोटी होती है। गायन एवं वादन में अगर एक से ज्यादा अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग है तो बारी

1. शाक्य, यचु/ धाः बाजंया म्हसीका/ p- 35

बारी के साथ बजाने का समय गौ बजाने के बाद दिया जाता है।

(5) **त्वाः ल्हायेगुः** गायन तथा वादन की समाप्ति के समय वाद्य द्वारा त्वाः ल्हायेगु बोल बजाया जाता है। जिससे दर्शक तथा श्रोतागण को प्रस्तुतीकरण समाप्ति का आभास दिया जाता है।

(2) **3:2:1 खिं वाद्य बोल[1]:**

गौ

X			O			X			O		
‖ ना	ना	खर्ग	द्रि	द्रि	ऽ	खौ	ऽ	ऽ	खर्ग	नाघे	धीं
ना	ना	खर्ग	द्रि	द्रि	ऽ	धीं	ऽद्रि	धीं	धीं	ऽ	ऽ
घे	ना	खर्ग	द्रि	द्रि	ऽ	धींद्रि	धीं	ऽ	धीं	ऽ	ऽ
ना	ना	खर्ग	द्रि	द्रि	ऽ	धे	ना	खर्ग	द्रि	द्रि	ऽ
ना	ति	खता	घे	घे	नाघे	खौ	ता	खति	धीं	ति	खति
रि	ऽधीं	घेतिं	रि	ऽधीं	घेतिं	रि	धीं	ऽ	घे	तिं	घेनि
ना	ऽ	ऽ	खर्ग	नाघे	धीं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

X			O			X			O		
घे	घे	नाघे	धि	नि	धिनि	घे	घे	नाघे	धिनि	ना	ऽ
घे	घे	नाघे	द्रि	ऽ	ताफ						
घे	ना	ऽ	खत्र	फ	धिनि	ना	ना	ऽ	ऽ	घेति	घेनि
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						

२. चाली

X			O			X			O		
‖ धि	नग	धिनि	धिं	नग	धिनि	धिं	नग	धिनि	ना	ऽ	ऽ ‖
घेन्	ऽ	ताघे	ऽ	द्रि	ताफ	घेन्	ऽ	ताघे	ऽ	द्रि	ताफ
घेन्	द्रि	ताघे	ना	फ	धिनि	ता	खौ	ऽ	घेन्	ति	घेनि

1. श्रेष्ठ, सुरेन्द्र/ शोध प्रबंध/ p- 54-61

ना	ऽ	ऽ	खर्ग	नाधे	धीं						

गौ

X			O			X			O		
ना	ना	खर्ग	दि	दि	ऽ	धौ	ऽ	ऽ	खर्ग	नाधे	धीं
ना	ना	खर्ग	दि	दि	ऽ	धीं	ऽदि	धीं	धीं	ऽ	ऽ
धे	ना	खर्ग	दि	दि	ऽ	धींदि	धीं	ऽ	धीं	ऽ	ऽ
ना	ना	खर्ग	दि	दि	ऽ	धे	ना	खर्ग	दि	दि	ऽ
ना	ति	खता	धे	धे	नाधे	धौ	ता	खति	धीं	ति	खति
रि	ऽधीं	धेतिं	रि	ऽधीं	धेतिं	रि	धीं	ऽ	धे	तिं	धेनि
ना	ऽ	ऽ	खर्ग	नाधे	धीं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

X			O			X			O		
धे	धे	नाधे	धिनि	धिनि	ऽ	धे	धे	नाधे	धिनि	ना	ऽ
धे	धे	नाधे	ऽ	दि	ताक						
धे	ना	ऽ	ख	त्क	धिनि	ना	ना	ऽ	धे	ति	धेनि
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						

३. चाली

X			O			X			O		
दि	ऽधीं	दिधीं	दि	ऽधीं	दिधीं	धे	ना	धेति	रि	ऽधीं	खति

ना	ऽ	ऽ	खर्गा	नाघे	धाँ						

गौ

X			O			X			O		
॥ ना	ना	खर्गा	दि	दि	ऽ	खौ	ऽ	ऽ	खर्गा	नाघे	धाँ
ना	ना	खर्गा	दि	दि	ऽ	धाँ	ऽदि	धाँ	धाँ	ऽ	ऽ
घे	ना	खर्गा	दि	दि	ऽ	धाँदि	धाँ	ऽ	धाँ	ऽ	ऽ
ना	ना	खर्गा	दि	दि	ऽ	धे	ना	खर्गा	दि	दि	ऽ
ना	ति	खता	घे	घे	नाघे	खौ	ता	खति	धाँ	ति	खति
रि	ऽधाँ	घेतिं	रि	ऽधाँ	घेतिं	रि	धाँ	ऽ	घे	तिं	घेनि
ना	ऽ	ऽ	खर्गा	नाघे	धाँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

X			O			X			O		
[॥ घे	घे	नाघे	धिनि	धिनि	ऽ	घे	घे	नाघे	धिनि	ना	ऽ ॥]
[॥ घे	घे	नाघे	ऽ	दि	ताक ॥]						
घे	ना	ऽ	ख	नक	धिनि	ना	ना	ऽ	घे	ति	घेनि
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						

३. चाली

X			O			X			O		
दि	ऽधाँ	दिधाँ	दि	ऽधाँ	दिधाँ	घे	ना	घेति	रि	ऽधाँ	खति

गौ

×			O			×			O		
ना	ना	खर्ग	ना	तिं	खता	खो	ऽ	ऽ	खर्ग	नाघे	धाँ
ना	ना	खर्ग	ना	ति	खता	घे	ना	खर्ग	ना	ति	खता
ना	ति	खता	घे	घे	नाघे	खौ	ता	खति	धाँ	ति	खति
रि	ऽधाँ	घेतिं	रि	ऽधाँ	घेतिं	रि	धाँ	ऽ	घे	तिँ	घेनि
ना	ऽ	ऽ	खर्ग	नाघे	धाँ						

×			O			×			O		
घे	घे	नाघे	घिनि	घिनि	ऽ	घे	घे	नाघे	घिनि	ना	ऽ
घे	घे	नाघे	ऽ	दि	ताफ						
घे	ना	ऽ	ख	नफ	घिनि	ना	ना	ऽ	घे	ति	घेनि
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						

४. चाली

×			O			×			O		
तातु	मनि	ऽ	ताफ	घिनि	ऽ	धाँ	दि	गिना	ना	ऽ	ऽ
घे	ता	घे	ऽ	दि	ताफ	घे	ता	घे	ऽ	दि	ताफ
घेनु	दि	ताघे	नाफ	घिनि	ऽ	ता	खौ	ऽ	घेतिं	घेनि	ऽ
ना	ऽ	ऽ	खर्ग	नाघे	धाँ						

गौ

×			०			×			०		
ताक्ड	धिं	नग	रिना	मना	ऽ	खौ	खर्गं	ऽ	नाघे	घाँ	ऽ
ताक्ड	धिं	नग	ताक्ड	धिं	नग	ताक्ड	धिं	नग	रि	ना	ऽ
ताक्ड	धिं	नग	रि	ना	ऽ	ताक्ड	धिं	नग	रि	ना	ऽ
घे	घे	नाघे	नाक्ड	धिनि	ऽ	ता	खौ	ऽ	घे	तिं	घेति
ना	ऽ	ऽ	खर्ग	नाघे	घाँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

×			०			×			०		
घे	घे	नाघे	धिनि	धिनि	ऽ	घे	घे	नाघे	धिनि	ना	ऽ
घे	घे	नाघे	ऽ	दि	ताक्ड						
घे	ना	ऽ	ख	वक	धिनि	ना	ना	ऽ	घे	ति	घेनि
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						

५. चाली

×			०			×			०		
धिं	नग	ऽ	ताक्ड	घेनिऽ	ऽ	ना	ऽ	ना	नाघे	घाँ	ऽ
घेन्	दिगि	ना	खति	ताक्ड	धिनि	ना	ऽ	ना	नाघे	घाँ	ऽ

गौ

X			O			X			O		
‖ घे	ति	खर्ग	रिना	मना	ऽ	खौ	खर्ग	ऽ	नाघे	धाँ	ऽ
धेति	खर्ग	ऽ	रिना	मना	ऽ	खोति	खर्ग	ऽ	रिना	मना	ऽ
खौति	खर्ग	ऽ	रिना	मना	ऽ	नाति	खता	ऽ	घे	घे	नाघे
खौ	ता	खति	धाँ	ति	खति	रि	ऽधाँ	घेतिं	रि	ऽधाँ	घेतिं
रि	धाँ	ऽ	घेति	घेनि	ऽ	ना	ऽ	ऽ	खर्ग	नाघे	धाँ

X			O			X			O		
‖ घे	घे	नाघे	धिनि	धिनि	ऽ	घे	घे	नाघे	धिनि	ना	ऽ ‖
‖ घे	घे	नाघे	ऽ	दि	ताक ‖						
घे	ना	ऽ	ख	वक	धिनि	ना	ना	ऽ	घे	ति	घेनि
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						

६ चाली

X			O			X			O		
धदि	गिना	ऽ	नादि	गिना	ऽ	नादि	गिना	ऽ	नादि	गिना	ऽ

गौ

X			O			X			O		
॥ धाँ	घे	नाघे	घे	ना	तिनि	खौ	खर्ग	S	नाघे	धाँ	S
धे	धे	नाघे	घेना	तिनि	S	ति	घे	नाघे	घे	ना	S
घे	घ	नाघे	नाक	धिनि	S	ता	खौ	S	घेतिं	घेनि	S
ना	S	S	खर्ग	नाघे	धाँ						

X			O			X			O		
[॥ घे	घे	नाघे	धिनि	धिनि	S	घे	घे	नाघे	धिनि	ना	S ॥]
घे	घे	नाघे	S	दि	ताक						

X			O			X			O		
खौ	ता	खति	धाँ	S	S	दि	ता	खति	ता	धेनि	ता
घेन्	दिगी	ना	ना	दि	S	धाँ	धाँ	धाँ	धेन्	ति	S
रगा	तिना	S	दि	घे	S						

जति ताल

थेन	धिनि	ता	थौ	धिनि	ताक	धिनि
थेनि	मना	S	थेनि	मना	Sक	धाँ
थेनि	मना	S	थेना	खति	धाँ	S
धाँ	S	S	थौ	S	ना	S
तिनि	तानि	निता	S	S	S	S

जति ताल

२. चाली

खर्ग	ना	द्रि	खर्ग	ना	द्रि	S
तिं	खर्ग	ना	द्रि	खर्ग	ना	थेनि
धाँ	थेS	थेना	धि	S	ना	S

जति ताल

गौ

खर्ग	तिं	द्रि	थौ	S	ना	S
खर्ग	तिं	द्रि	खर्ग	द्रि	ख	गंड्रि
तिनि	तानिं	निता	खति	ताक	धिं	S
धिं	S	थौता	ताक	धिनि	ताक	धिनि
धाँ	S	धाँ	धाँ	S	थेना	खति
धाँ	S	S	थौ	S	ना	S

3:2:2 द्या:/धाः वाद्य बोल[1]:

ताल - पलेमा, लंवता, अस्तरा

ताल : पलेमा

छुमा:

X		X		0	
१	२	३	४	५	६
धाँ	-	घें	धाँ	दिगि	दिगि चा
कुं	घें	धाँ	दिगि	दिगि	
घें	घें	चा	-	ख	द्रिख

	X		X		0	
१	(घेंचा	वचा	खचा	घें	दिगि	घेनि)३
	घेनक	घेंचा	घें	-	ख	द्रिख
२	(घेंचा	घें	दिगिचा	घें	दिगिचा	घेनि)३
	घेनक	घेंचा	घें	-	ख	द्रिख
३	(घेंचा	घें	निघें	चा	निघें	चाक)३
	घेनक	घेंचा	घें	-	ख	द्रिख
४	(चादिं	खचा	घेंनि	चा	दिचा	द्रिख)३
	चाक	चाक	चा	-	ख	द्रिख
५	(धाँ	घेंघें	निघें	चा	निघें	चाक)३
	चाक	चाक	चा	-	ख	द्रिख
६	(चा	खति	चाकु	धां	निकु	धाँ)३
	चाक	चाक	चा	-	ख	द्रिख
७	घेनि	वचा	खति	चा	द्रिघें	चाक)३
	चाक	चाक	चा	-	ख	द्रिख

1. शाक्य, यचु/ धाः बाजंया म्हसीका/ p- 84-88

गौ:

X		X		0		
१	२	३	४	५	६	
(धाँ	द्रिख	धाँ	द्रिख	ख	द्रिख)	२
चा	द्रिख	चा	द्रिख	ख	द्रिख	
घें	घें	चा				

त्वा ल्हायेगु:

X		X		0		
१	२	३	४	५	६	
(घेनि	घेंचा	घेंनि	घेंचा	घें	धाँ)	२
चा	द्रिख	द्रिघें	चा	द्रिघें	चाक	
घें	घें	चा				

ताल: लंवता

छुमा:

X				0			
१	२	३	४	५	६	७	८
घें	दि	धाँ	-	घें	दि	धाँ	-
ख	चा	घें	चा	ख	ति	धाँ	-
र	ग	दि	ग	चा	ले	ख	ति
चा	कु	धाँ	-	नि	कु	धाँ	-
घें	-	घें	चा	दि	चा	चा	-
च	चा	चा	चा	चा	घें	चा	-
घें	चा	द्रि	घें	ख	चा	द्रि	घें
चा	-	द्रि	ख	घें	-	चा	-

	१	२	३	४	५	६	७	८
१	(घें	घें	चा	घें	नि	घें	चा	क)२
	घें	घें	चा	घें	घें	घें	चा	घें
	घें	घें	चा	घें	नि	घें	चा	क
२	(चाक	चाक	चा	घें	नि	घें	चा	क)२
	चाक	चाक	चा	घें	चाक	चाक	चा	घें
	चाक	चाक	चा	घें	नि	घें	चा	क
३	॥ धाँ	घें	दि	चा	ख	ति	दि	चा
	दि	चा	दि	चा	ख	ति	चा	-
४	घें	चा	ख	घें	दि	चा	घें	नि
	चा	-	रग	रग	चा	कु	धाँ	- ॥
५	घें	घें	चा	घें	नि	घें	चा	-
	चाक	चाक	चा	घें	नि	घें	चा	-
	घें	घें	चा	घें	चाक	चाक	चाघें	-
	चाक	चाक	चा	घें	निघें	चा	क	-

गौ:

X				0			
१	२	३	४	५	६	७	८
(घें	घें	चा	घें	नि	घें	चा	-
ख	ख	चा	घें	नि	घें	चा	-)२
घें	घें	चा	घें	ख	ख	चा	घें
चाक	चाक	चा	घें	नि	घें	चा	-
घें	चा	ख	घें	दि	चा	घें	नि
चा	-	घें	चा	घें	चा	-	-

त्वा ल्हायेगु:

X				0			
१	२	३	४	५	६	७	८
(घें	घें	चा	घें	चा	कु	धाँ	-
ख	ख	चा	घें	चा	कु	धाँ	-)२
चा	घें	दि	चा	दि	घें	दि	चा
ख	घें	दि	चा	चा	कु	धाँ	-
चा	घें	चा	चा	दि	घें	चा	चा
ख	चा	घें	चा	घें	-	चा	-

ताल : अस्तरा

छुमा:

X		0		X		X		0	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
घें	-	चा	क	दि	चा	चा	-	ख	द्रिघें
चा	घें	चा	चा	दि	घें	चा	-	ख	द्रिघें
रिग	ताक	घें	-	रिग	ताक	घें	-	ख	द्रिघें
ति	-	ति	-	ति	द्रिख	चा	-	ख	द्रिघें

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
घें	चाघें	निघें	चाक	घें	चाघें	निघें	चा	निघें	चाक
घेंचा	कचा	खचा	घें	घेंचा	कचा	खचा	घें	निघें	चाघें
चा	घेंघें	निघें	चाक	चा	घेंघें	निघें	चा	निघें	चाक
चा	खति	चाकु	धाँ	चाचा	द्रिख	चाकु	धाँ	निकु	धाँ
चाचा	खचा	खति	चाक	दिचा	खति	चाक	चाक	चाक	चाक
चाचा	द्रिख	धाँ	धाँ	चाचा	द्रिख	चाकु	धाँ	निकु	धाँ
चा	घेंघें	नक	घें	चा	घेंघे	नक	घें	नक	घें
चाद्रि	खचा	द्रिख	चाक	चा	खचा	घेंनि	चा	द्रिख	चाक

गौ:

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
घेंनि	द्रिख	चा	चा	घेंनि	द्रिख	चा	चा	चा	चा
चाघें	निघें	चा	चा	चाघें	निघें	चा	चा	चा	चा
घें	चा	घेंचा	घें	घेंचा	घें	चा			

त्वा ल्हायेगु:

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
घेंनि	घेंचा	घें	धाँ	घेंनि	घेंचा	घें	धाँ	दि	धाँ
चा	घें	चा	चा	दि	घें	चा	-	द्रिख	चाक
घें	चा	घेंचा	घें	घें	-	चा			

3:2:3 धिमे/धिमय् वाद्य बोल[1]:

॥ घ्यो ल्हाय्गु ॥

नं. १

((घुंन्ना ताघुं घुन्ना ताऽता)^{२} (तताखुती ताखुतता खुतीताखु ताऽता)^{२})^{२}

तताघुंताघुंतता खुताघुंताघुंतता घुंतता खुता ताखुतिताखुतता घुंन्ना ॥

नं. २

(घुना घुना घुना घुना घुनानाघुं नाध्यॉं तताखुती ताखुतता खुताताखु ताऽता)^{२}

(घुंनाखुती ताखुतता खुतीताखु ताऽता)^{२}

तताखुती ताखुतता खुताताखु ताऽता

तताघुंताघुंतता खुताघुंताघुंतता घुंतता खुता ताखुतिताखुतता घुंन्ना ॥

नं. ३

((घुंन्नाखु तताघुं घुन्ना ताऽता)^{२}

(तताखुती ताखुतता खुताताखु ताऽता)^{२}

घुंन्नाखु तताघु ताखुतताघुं घुंन्ना ताऽता ताखो ताखो ता घुं ॥

नं. ४

(ताऽताखु ताऽताखु ताऽताखु ताघुं , ताऽताखु ताऽताखु खुतिताखु ताघुं)^{२}

(ताऽताखु ताघुं , खुतिताखु ताघुं)^{२}

तताघुंताघुंतता खुताघुंताघुंतता घुंतता खुता ताखुतिताखुतता घुंन्ना ॥

नं. ५

(ध्यॉंन्नाखु ताखु ता ताघुं, ध्यॉंन्नाखु ताखु तताखुति ताघुं)^{२}

(तताघुंना तताघुंना तताघुंना ताघुं)^{२}

(तताघुंना ताघुं)^{२}

तताघुंताघुंतता खुताघुंताघुंतता घुंतता खुता ताखुतिताखुतता घुंन्ना ॥

नं. ६

ताऽखुति ताऽखुति ताऽखुति ताऽता खुतिताखु ताघुं ताखोता घुंन्ना घुंनिनाखु नाता खुतिताखु,

ताऽखुति ताऽखुति ताऽता खुतिताखु ताघुं ताखोता घुंन्ना घुंनिनाखु नाता

---

1. हाड़ी गाउँ कोटा त्वाः/ दाफा भजन समूह/ धिमे बाजा बोल

खुतिताघुं घुंन्ना घुंनिनाखु नाऽता, खुतिताघुं घुंन्ना घुंनिनाघुं घुंन्ना,

घुंनिनाघुं घुंघुं ताघुंनाता घुंनाघुंना घुं,

घुंनिनाखु ताघुं ताखोता घुंघुं, ताऽघुं ताऽघुं ताघुंनाता घुं,

घुंन्ना ताऽता ताखो ताखो ता घुं ॥

नं. ७

(घुंनाखुति ताघुं घुंनाखुति ताऽता,)[२]

(तताखुती ताखुतता खुतीताखु ताऽता)[२]

(घुंनाखुति ताघुं घुंनाखुति ताऽता,)[२]

तताखुती ताखुतता खुतीताखु ताऽता

तताखुती ताखुतता खुतीताखु ताऽताखु

तताघुंताघुंतता खुताघुंताघुंतता घुंतता खुता ताखुतिताखुतता घुंन्ना ॥

नं. ८

(घुंन्ना ताघुं घुन्ना ताऽता, तताखुती ताखुतता खुतीताखु ताऽघुं)[२] घुंनाखुति ताखुतता खुतिताखु ताऽताखु

तताघुंताघुंतता खुताघुंताघुंतता घुंतता खुता ताखुतिताखुतता घुंन्ना ॥

॥ द्यो चाःहिलेगु ॥ (चो ताः)

घुंन्नाला घुंन्नाला घुंन्नां ताघुं, घुंन्नाला घुंन्ना तताघुं ताघुं तता घुंन्नाला खुता घुंनां ताघुं घुनिनाखु ता ताखु ,

तात्ताले खुता खुतिताखु ताखुताले खतिताखु ताखु ता ताघुं'''''' (निचाः तक)

(स्वचाःले थायुगुः) **(लवँ ताः)**

खुतिताघुं घुंनाध्याँ घुंनानाखु नान्नाले''''''

खुतिताघुं घुंनाध्याँ घुंनानाखु नाता तताघुंताघुं तता खुताघुंताघुं तता घुंतता खुता तताखुता तखुतता घुंन्ना ॥

(अले द्यो ल्हायुगु)''''''''''''

॥ स्वाँनय् थाहाँ वनेबलय् थायुगु ॥ (लवँ ताः)

ताघुं घुंनाखु, ताघुं घुंनाखु, ताघुं घुंनाखु, ता तात्ताखु,

तात्ताले खुतिता ताघुंनिता खुतिता खुतिताघुं घुंनाखु तात्ताघुं घुंनिनाघुं निताघुंनि ताघुंनिता घुंनि घुंनि घुंनिनाघुं घुंनाखु ता तात्ताखु,

॥ पुजा बाजँ थायुगु ॥ (प्रतालः)

खुताघुं घुंनाता, खुताघुं घुंनाता, खुताघुं घुंनाता, खुताघुं घुंनाताता

खुताघुं घुंनाता, खुताघुं घुंनाताता''''''

खुताघुं घुंन्ना ताघुं, घुंन्नाघुं घुंन्नाध्याँ, घुन्नाघुं घुंन्ना ताता खुता ता:ताखु ता'

खुताखु ताता खुताता, ता:खुति ताखुतता खुताता, ताघुं घुंनाध्याँ,'

खुताघुं घुंन्ना ताघुं, घुंन्नाघुं घुंन्ना, घुंन्नाखु ता:ताघुं घुंन्ना, घुंन्नाखु ता:ताघुं घुंन्ना, घुंन्नाखु ता: ता:ताखु ता,''

खुताखु ताताखु, ताखुता घुं घुंनाध्याँ, ''''''

खुताखु ताता खुताता, ताखुति ताखुताता खुताता ताघुं घुंनाध्याँ'

खुताखु ताता खुताता, ताखुति ताखुताता घुंन्नाता,

घुंन्ना ताघुं घुंन्नाता, ताखुति ताखुताता घुंन्नाता,'''''।

घुंन्ना ताघुं घुंन्नाता, तर्रम तर्रम घुंन्नाता''।।

घुंन्ना ताघुं घुं, ताघुंनिता घुं घुं, ताघुंनिताखु ता, ताखुता ताखु निताखुता खुतिताखु ताखु ता,

ता घुं घुं ताघुंनिता घुं घुं, ताघुंनिताखु ता, ताखुता ताखु निताखुता,

खुतिताखु ताखु ता,

खुताघुं घुंन्ना ताघुं, घुंन्नाघुं घुंन्नाध्याँ, घुन्नाघुं घुंन्ना ताता खुता ता:ताखु ता''''''''''''

खुताघुं घुंनाता, खुताघुं घुंनाता, खुताघुं घुंना ता ता, खु ता घुं ।

3:2:4 नाय् खिं वाद्य बोल[1]:

ताल- एकताल- १२/६ मात्रा (+ -)

	१	२	३	४	५	६	
क)	पा	क	पाक	पा	क्र	टं	३
	पा	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

	१	२	३	४	५	६	
	रं	पा	धंड	पा	पा	धंड	२
ख)	पा	पा	धंड	पा	ऽ	ऽ	
	पा	क	पाक	पा	क्र	धंड	
	पा	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

	१	२	३	४	५	६	
	रं	पा	पाधं	पा	पा	पाधं	
ग)	पा	पा	पाधं	पा	ऽ	ऽ	२
	पा	क	पाक	पा	क्र	धंड	
	पा	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

	१	२	३	४	५	६	
	रं	पा	नक	पा	पा	नक	
घ)	पा	पा	नक	पा	ऽ	ऽ	
	रं	पा	नक	पा	क्र	धंड	
	पा	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

1. महर्जन, राजेंद्र/ हाम्रो सांस्कृतिक पहिचान तथा परंपरागत बाजाहरू/ p- 116-121

ङ)	१	२	३	४	५	६	
	रं	टं	पाटं	पा	दु	पाक	२
	रं	पा	धंड	पा	पा	धंड	
	पा	धं	दुपा	रं	पा	ऽ	
	पा	क	पाक	पा	क्र	धंड	
	पा	ऽ	ऽ	पा	ऽ	धंड	
	रं	पा	धंड	पा	पा	धंड	
	पा	पा	धंड	पा	ऽ	पाक	
	रं	पा	धंड	पा	पा	धंड	
	पा	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

च)	१	२	३	४	५	६	
	पाक्र	धं	पा	पाक्र	धं	पा	
	पाक्र	धं	पा	पा	दु	पाक	२
	पा	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

छ)	१	२	३	४	५	६	
	रं	टं	पाटं	पाख	दुपा	नखपा	३
	उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

ज)	१	२	३	४	५	६	
	पा	धं	दुपाधं	पा	धं	दुपाधं	
	पा	धं	दुपाधं	पाख	दुपा	नकपा	२
	उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

झ)	१	२	३	४	५	६	
	पा	धं	पाक्रधं	पा	धं	पाक्रधं	
	पा	धं	पाक्रधं	पाख	दुपा	नकपा	
	पा	धं	पाक्रधं	पाख	दुपा	नकपा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

	१	२	३	४	५	६	
	पा	धं	पाक्रधं	पा	धं	पाक्रधं	
ञ)	पा	धं	पाक्रधं	पा	ऽ	पाक्र	
	रं	टं	पाटं	पाख	दुपा	नकपा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

	१	२	३	४	५	६	
ट)	पा	घुँ	पाघुँ	पा	क्र	टं	३
	पा	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

	१	२	३	४	५	६	
	पाक्र	धं	पा	दिक्र	धं	पा	
ठ)	पाक्र	धं	पा	पा	पा	ऽ	
	पाक्र	धं	पा	पाख	दुपा	नकपा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

	१	२	३	४	५	६	
	रं	दुपा	नकपा	उई	पा	ऽ	
ड)	पाख	दुपा	नकपा	उई	पा	ऽ	
	रं	दुपा	नकपा	पाख	दुपा	नकपा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

	१	२	३	४	५	६	
	रं	दुपा	नकपा	पाख	दुपा	नकपा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	
ढ)	रं	दुपा	नकपा	पाख	दुपा	नकपा	
	पाख	दुपा	नकपा	पा	पा	पाक	
	रं	दुपा	नकपा	पाख	दुपा	नकपा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

ण)	१	२	३	४	५	६	
	पाख	दुपा	नकपा	पाख	दुपा	नकपा	
	पाख	दुपा	नकपा	पा	पा	पाक	
	रं	दुपा	नकपा	पाख	दुपा	नकपा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक	

गौ

१	२	३	४	५	६
रं	टं	पाट	रं	दुपा	नकपा
उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पाक
रं	टं	पाटं	रं	दुपा	नकपा
पा	धं	दुपा	रं	पा	ऽ
रं	पा	धंड	पा	पा	धंड
पा	पा	ऽ	रं	पा	धं

ताल- प्रताल, १४/७ मात्रा

क)	१	२	३	४	५	६	७	
	पा	ऽ	क	पा	क्र	ध	ड	२

ख)	१	२	३	४	५	६	७	
	रं	पा	धं	पाध	दुपा	नक	पा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पा	क	
	रं	पा	धं	पाध	दुपा	नक	पा	
	पा	पा	धं	पाध	दुपा	नक	पा	
	रं	पा	धं	पाध	दुपा	नक	पा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पा	क	

ग)	१	२	३	४	५	६	७	
	पाख	दुपा	नक	पाख	दुपा	नक	पा	३
	पा	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	नि	

घ)	१	२	३	४	५	६	७	
	रं	दुपा	नक	रं	दुपा	नक	पा	३
	पा	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	नि	

ङ)	१	२	३	४	५	६	७	
	रं	दुपा	ऽक्र	रं	दुपा	नक	पाक	२
	रं	दुपा	ऽक्र	रं	ऽदुपा	ऽक्र	पा	
	पा	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	ड	

च)	१	२	३	४	५	६	७	
	रं	दुपा	नक	रं	दुपा	नक	पाक	
	पाख	दुपा	नक	पाख	दुपा	नक	पाक	
	रं	दुपा	नक	पाख	दुपा	नक	पा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	ड	

छ)	१	२	३	४	५	६	७	
	रं	दु	ऽक्र	रं	दुपा	नक	पाक	
	पाख	दुपा	ऽक्र	पाख	दुपा	नक	पाक	
	रं	दुंपा	ऽक्र	रं	दुपा	नक	पा	
	पा	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	ड	

ज)	१	२	३	४	५	६	७	
	रमा	क्रधं	पाक	रमा	क्रधं	नक	पाक	२
	रमा	क्रधं	पाक	रमा	क्रधं	नक	पा	
	पा	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	ड	

झ)	१	२	३	४	५	६	७	
	रं	टं	टं	रं	दुपा	नक	पाक	२
	रं	टं	टं	रं	दुपा	नक	पा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	ड	

	१	२	३	४	५	६	७	
ञ)	पाक्र	धं	पा	पाध	दुपा	नक	पाक	२
	रं	टं	पा	पाध	दुपा	नक	पाक	
	पाक्र	धं	पा	पाध	दुपा	नक	पा	
	उई	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	ड	

	१	२	३	४	५	६	७	
ट)	पाक्र	धं	पा	पाक्र	धं	पा	धं	३
	पा	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	ड	

	१	२	३	४	५	६	७	
ठ)	पाक्र	धं	धं	पाक्र	धं	पाक्र	धं	३
	पा	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	ड	

	१	२	३	४	५	६	७	
ड)	पाख	दुपा	ऽक्र	पाख	दुपा	ऽक्र	धं	३
	पा	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	ड	

	१	२	३	४	५	६	७	
ढ)	रड	पाधं	दुपा	रड	पाधं	दुपा	धड	३
	पा	ऽ	ऽ	पा	क्र	ध	ड	

गौ

१	२	३	४	५	६	७	
रड	पा	पा	उई	ऽ	पा	ऽ	
रड	पा	पाक	रड	पाक	रड	पाक	२
रड	पाधं	दुपा	नक	पाधं	दुपा	धड	
पाधं	ऽधं	ऽदृ	धं	ऽ	रंपा	टं	
पा	ऽ	ऽ	पा	ऽ	पा	पा	

इस प्रकार नेवारी वाद्यों के प्रस्तुतीकरण में चाहे गायन के साथ संगत हो या स्वतंत्र वादन हो ताल के बोलो का विस्तार किया जाता है। वाद्य गुरुओं के अनुसार प्रत्येक नेवारी बस्ती में एक ही वाद्य बजाने का तरीका तथा बोलो में थोड़ा बहुत अंतर देखने को मिलता है। इसका कारण यह मान सकते हैं कि स्थान अनुसार गुरु के विचारों में भिन्नता होती है। जिसकी वजह से वह वाद्य के बोलों में अंतर होने लगा है और बोलो को लिखने की परंपरा ना होने के कारण गुरु को अपने सीखे हुए बोल जितने याद होते हैं उसी के अनुरूप वह अपने शिष्य को सिखाते हैं। जिसमें बोलो की कमी ज्यादा होने की संभावना होती है। **उपरोक्त उल्लेखित सभी बोल विस्तार अवनद्ध वाद्यों के है**। जिसमें वर्तमान समय में लिखित स्वरूप देने का प्रचलन है। इन सभी वाद्य में से खिं और घाः वाद्य में गायन के साथ संगत भी की जाती है बाकी धिमे और नाय् खिं वाद्य में सिर्फ वादन का प्रस्तुतिकरण ज्यादा होता है। काठमांडू के गुरु शेष नारायण महर्जन के अनुसार नेवारी वाद्य जैसे धिमे, घाः, नाय् खिं वाद्य इत्यादि का जात्रापर्व तथा त्यौहारों में, नगर परिक्रमा के समय, मंदिर के सामने अलग, पहाड़ को चढ़ने के समय अलग, पूजा विधि में अलग इत्यादि स्थानों में अलग-अलग संरचना बजाई जाती है।[1] जिससे वाद्यों की विविधता देखने को मिलती है।

1. साक्षात्कार/ शेष नारायण महर्जन/ काठमांडू/ Dt.: 13/11/2018